कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत एकमात्र कृषि साप्ताहिक

डाक प्रेषण का दिन - सोमवार, मंगलवार
Registered Postal Regn. No.MP/Bhopal/143/2022-24 RNI No. 1832/57

कृषक जगत

राष्ट्रीय कृषि अखबार

भोपाल–जयपुर–रायपुर

ISSN -0970-8650

संस्थापित 1946 भोपाल, प्रकाशन - सोमवार 6 मई 2024 वर्ष-78 अंक- 36 मूल्य-रु. 12/- कुल पृष्ठ- 16 www.krishakjagat.org पृष्ठ- 1

कृषक जगत न्यूज़ वेबसाइट पर जाने के लिए QR कोड स्कैन करें

श्रेष्ठ कृषि पत्रकारिता के लिए भाकृअनुप ICAR चौधरी चरणसिंह अवार्ड से पुरस्कृत

कम हुई गेहूं की सरकारी खरीदी

खरीद केन्द्रों पर सन्नाटा

(अतुल सक्सेना)

भोपाल/नईदिल्ली। देश एवं प्रदेश में इस वर्ष गेहूं की सरकारी खरीदी मंद गति से चल रही है। यदि यही रफ्तार रही तो विपणन वर्ष 2024-25 में खरीदी लगभग आधी रह जाएगी, क्योंकि केन्द्र सरकार ने प्रदेश को लगभग 100 लाख टन गेहूं खरीदी का लक्ष्य दिया है और 30 अप्रैल तक मात्र 36 लाख टन की खरीदी हो पायी है। जबकि गत वर्ष इस अवधि में लगभग 56 लाख टन गेहूं की खरीद हो चुकी थी। मंडियों में समर्थन मूल्य से अधिक भाव मिलने के कारण किसानों ने ट्राली का मुख मंडियों की ओर मोड़ दिया है। जबकि सरकारी खरीदी केन्द्र सूने पड़े हैं। इसके अलावा लोकसभा चुनाव को भी कम खरीदी का कारण माना जा रहा है। देश में गत वर्ष की तुलना में लगभग 23 लाख टन कम गेहूं खरीदा गया है। कम खरीदी को देखते हुए प्रदेश सरकार ने गेहूं खरीदी की तारीख 20 मई तक बढ़ा दी है।

खरीदी की समय सीमा बढ़ी

प्रदेश में दूसरे अग्रिम उत्पादन अनुमान के मुताबिक वर्ष 2023-24 में लगभग 329 लाख टन से अधिक गेहूं उत्पादन का अनुमान लगाया गया है। प्रदेश में अब तक 100 लाख टन के विरुद्ध 36 लाख टन गेहूं की खरीद हुई है, जिसके लिए 4 लाख से अधिक किसानों को 7280 करोड़ का भुगतान किया गया है।

प्रदेश में सरकार द्वारा समर्थन मूल्य पर गेहूं खरीदने के लिए इंदौर, उज्जैन, भोपाल और नर्मदापुरम संभाग के लिए सात मई और जबलपुर, रीवा, शहडोल, सागर, ग्वालियर और चंबल संभाग के लिए 15 मई तक अवधि निर्धारित की थी। कई स्थानों पर वर्षा और ओलावृष्टि के कारण उपज और उपार्जन का कार्य प्रभावित हुआ। इसे देखते हुए केंद्र सरकार ने 50 प्रतिशत तक चमकविहीन गेहूं लेने की छूट दी है। सभी कलेक्टरों को खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग ने निर्देश दिए हैं कि वे पंजीकृत किसानों को इसकी सूचना दें ताकि वे अपनी सुविधा के अनुसार उपज लेकर उपार्जन केंद्र पहुंचे। प्रदेश में 15 लाख किसानों ने समर्थन मूल्य पर उपज बेचने के लिए पंजीयन कराया है।

ज्ञातव्य है कि गेहूं की एमएसपी 2275 पर प्रदेश में प्रति क्विंटल 125 रु. बोनस दिया जा रहा है जिससे कुल एमएसपी 2400 रुपए क्विंटल हो गई है। जबकि मंडियों में गेहूं 2600 से 2800 रुपए प्रति क्विंटल तक खरीदा जा रहा है।

गेहूं की खरीद कम नहीं होगी, हम अपने अनुमानित खरीद लक्ष्य को हासिल करेंगे क्योंकि पंजाब और हरियाणा में गेहूं की अच्छी आवक हो रही है। एफसीआई इन दोनों राज्यों से लगभग 200 लाख टन गेहूं की खरीदी करेगा।
– अशोक के. मीणा
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, एफसीआई

देश में एमएसपी पर गेहूं खरीदी

(लाख टन में -30 अप्रैल तक)

राज्य	2023-24	2022-23
पंजाब	90.4	103.0
हरियाणा	61.2	57.6
मध्य प्रदेश	36.0	56.0
उत्तर प्रदेश	5.6	1.3
राजस्थान	4.1	1.0
सभी राज्य	**196.2**	**219.5**

राष्ट्रीय परिदृश्य

इधर देश के प्रमुख गेहूं उत्पादक राज्यों में कम खरीद पर केन्द्र चिंतित है। सरकार ने वर्ष 2024-25 में 30 अप्रैल तक 196 लाख टन से अधिक गेहूं खरीदा है, जबकि राष्ट्रीय गरीब कल्याण योजना समेत सभी कल्याणकारी योजनाओं के लिए सालाना जरूरत 186 लाख टन है। खाद्यान्न की खरीद और वितरण के लिए सरकार की नोडल एजेंसी भारतीय खाद्य निगम अब बफर स्टॉक बढ़ाने के लिए 2024-25 सत्र में 310-320 लाख टन गेहूं खरीद के अपने लक्ष्य को पूरा करने के प्रयास कर रही है। केंद्र ने गत विपणन वर्ष 2023-24 में 261.97 लाख टन गेहूं की खरीद की थी।

हालांकि, गेहूं की खरीद पिछले साल की समान अवधि के 219.5 लाख टन से अब तक 11 प्रतिशत कम हुई है। इसका मुख्य कारण मध्य प्रदेश और पंजाब में कम खरीद का होना है।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

घटते भू- जलस्तर से चिंतित मध्य प्रदेश सरकार

किसान धान छोड़ नकदी फसल लगाएं

मुख्य सचिव की अध्यक्षता में उच्चस्तरीय समिति बनी

भोपाल। मध्य प्रदेश सरकार अब किसानों को खरीफ में धान फसल के बजाए अन्य नकदी फसल लगाने के लिए प्रोत्साहित करेगी। साथ ही इस वैकल्पिक फसल की खरीदी भी सरकार करेगी और उसका अधिक मूल्य भी दे सकती है। पानी पियु फसल धान के कारण राज्य का भू-जलस्तर अत्यधिक घट गया है। 6 सन्दर्भ बिन्दुओं पर केन्द्रित और मध्य प्रदेश में बहुत अधिक जलदोहन से घटते हुए भू-जलस्तर की समस्या के निराकरण के लिए सरकार ने मुख्य सचिव की अध्यक्षता में अन्तर्विभागीय उच्च स्तरीय समिति का गठन किया है। ये समिति जिलेवार, फसलवार विशेषकर धान की बुवाई के आंकड़ों की समीक्षा करेगी। साथ ही धान की ऐसी किस्म भी सुझाएगी जिसमें पानी कम लगता हो। सिंचाई के लिए भू जल के विकल्प के रूप में नहर, माइक्रो इरीगेशन, उद्वहन सिंचाई या सिंचाई की नई तकनीक पर भी विचार करेगी। समिति में जल संसाधन, ऊर्जा, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति, पंचायत-ग्रामीण विकास एवं नवीन एवं नवकरणीय ऊर्जा विभाग के अपर मुख्य सचिव, उद्यानिकी एवं लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी के प्रमुख सचिव सदस्य होंगे। समिति के सह संयोजक कृषि विभाग के अपर मुख्य सचिव होंगे। परन्तु एक माह की समय सीमा में धान के विकल्प पर रिपोर्ट देने वाली इस समिति में प्रदेश के कृषि विश्वविद्यालय या कोई कृषि वैज्ञानिक का नहीं होना आश्चर्य की बात है।

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

केन्द्र ने 6 देशों के लिए प्याज निर्यात खोला

नई दिल्ली (कृषक जगत)। भारत सरकार ने छह पड़ोसी देशों बांग्लादेश, संयुक्त अरब अमीरात (यूएई), भूटान, बहरीन, मॉरीशस और श्रीलंका को 99,150 एमटी प्याज निर्यात की अनुमति दी है। पिछले वर्ष की तुलना में 2023-24 में खरीफ एवं रबी फसलों की अनुमानित कम उपज के कारण पर्याप्त घरेलू उपलब्धता सुनिश्चित करने और अंतरराष्ट्रीय बाजार में मांग बढ़ाने हेतु प्याज के निर्यात पर प्रतिबंध लगाया गया है।

इन देशों को प्याज का निर्यात करने वाली एजेंसी, नेशनल कोऑपरेटिव एक्सपोर्ट्स लि. (एनसीईएल) ने ई-प्लेटफॉर्म के माध्यम से निर्यात किए जाने वाले घरेलू प्याज को एल1 कीमतों पर हासिल किया और गंतव्य देश को अग्रिम भुगतान के आधार पर आपूर्ति की। छह देशों को निर्यात के लिए आवंटित कोटे की सप्लाई उनके द्वारा की गई मांग के अनुसार की जा रही है। देश में प्याज के सबसे बड़े उत्पादक के रूप में, महाराष्ट्र निर्यात के लिए एनसीईएल द्वारा प्राप्त किए जाने वाले प्याज का प्रमुख प्रदेश है।

प्याज पर लगाया 40 फीसदी निर्यात शुल्क

सरकार ने प्याज के निर्यात पर 40 प्रतिशत शुल्क लगाया है। इसके साथ ही देसी चने के आयात शुल्क से 31 मार्च 2025 तक छूट देने का फैसला किया है। इसके अलावा 31 अक्टूबर 2024 या उससे पहले जारी किए गए बिल ऑफ एंट्री के जरिए पीले मटर के आयात पर शुल्क छूट भी बढ़ा दी गई है। वित्त मंत्रालय की अधिसूचना के मुताबिक यह सभी बदलाव गत 4 मई से प्रभावी हो गए हैं।

देश में जायद फसलों का रकबा बढ़ा

अब तक 72.76 लाख हेक्टेयर में हुई बोनी

(विशेष प्रतिनिधि)

नई दिल्ली (कृषक जगत)। देश में जायद (ग्रीष्मकालीन) फसलों का रकबा गत वर्ष की तुलना में बढ़ा है। अब तक 72.76 लाख हेक्टेयर में बोनी हुई है जो गत वर्ष की तुलना में लगभग 5 लाख हेक्टेयर अधिक है। गत वर्ष अब तक 67.87 लाख हेक्टेयर में फसलें बोई गई थीं।

कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 4 मई तक जारी आंकड़ों के मुताबिक धान की बोनी 30.30 लाख हेक्टेयर में हुई है जो गत वर्ष से लगभग 2.75 लाख हेक्टेयर अधिक है। क्योंकि गत वर्ष अब तक 27.55 लाख हेक्टेयर में धान की बुवाई हो गई थी। इस वर्ष दलहनी फसलों का कुल क्षेत्र 20.20 लाख हेक्टेयर रहा वहीं वर्ष 2023 में कुल क्षेत्र 19.43 लाख हेक्टेयर क्षेत्र था। इसमें मुख्य रूप से मूंग 16.76 लाख हेक्टेयर में बोई गई है, जबकि गत वर्ष अब तक मूंग की बोनी 15.89 लाख हेक्टेयर में हुई थी। इसी प्रकार उड़द की बोनी 3.19 लाख हेक्टेयर में हो गई है, जो गत वर्ष अब तक 3.24 लाख हेक्टेयर में बोई गई थी। अन्य दलहनी फसलें भी 24 हजार हेक्टेयर में बोई गई हैं।

अब तक तिलहनी फसलों का कुल रकबा 10.19 लाख हेक्टेयर रहा वहीं गत वर्ष अब तक 9.83 लाख हेक्टेयर में बोनी हुई थी। इसके तहत मूंगफली की बुवाई 4.70 लाख हेक्टेयर में हुई है, जो गत वर्ष 4.63 लाख हेक्टेयर में हुई थी। इसी प्रकार तिल की बोनी 4.89 लाख हेक्टेयर में हो गई है, जो गत वर्ष 4.61 लाख हेक्टेयर में हुई थी। अन्य तिलहनी फसलों की बोनी भी 25 हजार हेक्टेयर में हो गई है।

इसी प्रकार अब तक मोटे अनाज की बोनी 12.08 लाख हेक्टेयर में हुई है। जो गत वर्ष अब तक 11.05 लाख हेक्टेयर में हो गई थी। मोटे अनाजों के तहत बाजरा की बोनी 4.66 लाख हेक्टेयर में, मक्का 6.84 लाख हेक्टेयर में बोया गया है जो गत वर्ष क्रमशः 4.45 एवं 6.21 लाख हेक्टेयर में बोया गया था।

ग्रीष्मकालीन (जायद) फसलों की बुवाई स्थिति 4 मई तक

(लाख हेक्टेयर)

फसल	बुवाई का क्षेत्र	
	वर्ष 2024	वर्ष 2023
चावल	**30.30**	**27.55**
दालें	**20.20**	**19.43**
मूंग	16.76	15.89
उड़द	3.19	3.24
अन्य दालें	0.24	0.29
तिलहन	**19.19**	**9.83**
मूँगफली	4.70	4,63
सूरजमुखी	0.34	0.32
तिल	4.89	4.61
अन्य तिलहन	0.25	0.27
मोटा अनाज	**12.08**	**11.05**
बाजरा	4.66	4.45
मक्का	6.84	6.21
कुल	**72.76**	**67.87**

नोट : कुल क्षेत्रफल के आंकड़े चार्ट से अलग हैं, क्योंकि सभी फसलों को चार्ट में शामिल नहीं किया गया है।

स्रोत : कृषि मंत्रालय

'टेक एक्सचेंज 2024 इवेंट' कृषि नवाचार में मील का पत्थर साबित हुआ

नई दिल्ली। कृषि नवाचार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक कार्यक्रम में, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईएआरआई) की ZTM और BPD इकाई ने गत दिनों पूसा कैंपस, नई दिल्ली में 'टेक एक्सचेंज 2024 - नवाचार के साथ उद्योग को सशक्त बनाना' की मेजबानी की। टेक एक्सचेंज 2024 कृषि क्षेत्र में परिवर्तनकारी बदलाव लाने के उद्देश्य से बौद्धिकता और संसाधनों के संमिलन का प्रतिनिधित्व करता है। इस आयोजन का उद्देश्य क्रांतिकारी एचडी 3386 गेहूं किस्म के लाइसेंस के लिए आईएआरआई की जेडटीएम और बीपीडी इकाई और मुख्य रूप से यूपी, पंजाब और हरियाणा की 100 से अधिक बीज कंपनियों के मध्य कृषि क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति के लिए एमओयू करना था।

इस अवसर पर प्रतिष्ठित हस्तियों में डॉ. टी.आर. शर्मा, उप महानिदेशक (फसल विज्ञान), आईसीएआर मुख्य अतिथि, डॉ. डी.के. यादव, एडीजी (बीज), आईसीएआर विशिष्ट अतिथि, डॉ. ए.के. सिंह, निदेशक आईएआरआई, डॉ. विश्वनाथन चिन्नुसामी, संयुक्त निदेशक (अनुसंधान), और डॉ. गोपाल कृष्णन, प्रमुख, जेनेटिक्स प्रभाग, शामिल थे। प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए डॉ. सिंह ने गेहूं और चावल जैसी उच्च मांग वाली फसलों के व्यवसायीकरण के संबंध में रणनीतिक नीति के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने इस तथ्य पर जोर दिया कि कैसे छोटे बीज उत्पादक प्रभावशाली प्रौद्योगिकियों को किसानों के खेत तक पहुंचाने की यात्रा शुरू कर सकते हैं और बहुत कम लागत पर अच्छी आमदनी और रोजगार पैदा कर सकते हैं।

डॉ. यादव ने एचडी 3386 गेहूं किस्म जैसी अभूतपूर्व फसल किस्मों को विकसित करने में आईसीएआर-आईएआरआई वैज्ञानिकों के अथक प्रयासों की सराहना की और विश्वास जताया कि ये उन्नत किस्में किसानों को राष्ट्रीय कृषि लक्ष्यों के अनुरूप उत्पादन बढ़ाने और उनकी आय दोगुनी करने में सशक्त बनाएंगी। मुख्य अतिथि डॉ.. शर्मा ने प्रौद्योगिकी पर किसी भी किस्म के विकास के लिए प्रजनकों और सहयोगियों द्वारा लगाए गए समय और प्रयास पर जोर दिया, जिसके प्रसार के लिए उपयुक्त भागीदारों की आवश्यकता होती है। उन्होंने निजी क्षेत्र के सहयोग से प्रौद्योगिकी विकासकर्ता और प्रसारकर्ता दोनों की भूमिकाएं प्रभावी ढंग से निभाने के लिए आईएआरआई को बधाई दी। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण एमओयू विनिमय समारोह था, जो ZTM और BPD इकाई और 100 से अधिक बीज कंपनियों के बीच साझेदारी का प्रतीक था।

भारत और न्यूजीलैंड कृषि, खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों में सहयोग करेंगे

संयुक्त व्यापार समिति की बैठक न्यूजीलैंड में हुई

नई दिल्ली। भारत सरकार के वाणिज्य सचिव श्री सुनील बर्थवाल के नेतृत्व में 26-27 अप्रैल 2024 न्यूजीलैंड में 11वीं भारत-न्यूजीलैंड संयुक्त व्यापार समिति (जेटीसी) की बैठक आयोजित की गई। बैठक में न्यूजीलैंड का प्रतिनिधित्व वहां के व्यापार मंत्री टॉड मैक्ले ने किया। इस दौरान कार्यवाहक मुख्य कार्यकारी और न्यूजीलैंड के विदेश मामलों और व्यापार सचिव श्री ब्रूक बैरिंगटन भी मौजूद थे।

भारत और न्यूजीलैंड ने दोनों देशों की अर्थव्यवस्थाओं और द्विपक्षीय व्यापार और दोनों देशों के लोगों के बीच आपसी संपर्क बढ़ाने की पर्याप्त संभावनाओं पर चर्चा की।

दोनों पक्षों ने मजबूत द्विपक्षीय आर्थिक संवाद जारी रहने और कृषि जैसे क्षेत्रों पर कार्य समूहों के गठन पर चर्चा की। इस दौरान खाद्य प्रसंस्करण, भंडारण एवं परिवहन; वानिकी और फार्मास्यूटिकल्स क्षेत्रों पर बल दिया गया। चर्चा में बागवानी क्षेत्र में सहयोग प्रमुख रहा, जिसमें कीवी फल क्षेत्र (गुणवत्ता और उत्पादकता, पैक हाउसों में उचित भंडारण और उनके उपयुक्त परिवहन) के साथ-साथ डेयरी क्षेत्र में सहयोग की संभावनाओं पर भी विचार-विमर्श हुआ। एक बार कार्य समूह गठित हो जाने के बाद, भारत और न्यूजीलैंड नियमित अंतराल पर उन कार्य समूहों द्वारा की गई प्रगति और उनकी सिफारिशों की समीक्षा करेंगे। बैठकों में गैर-टैरिफ बाधाएं (एनटीबी) और अंगूर, भिंडी और आम जैसे उत्पादों पर स्वच्छता तथा फाइटोसैनिटरी (एसपीएस) उपाय, जैविक में पारस्परिक मान्यता व्यवस्था (एमआरए) से संबंधित मुद्दे शामिल थे।

किसानों के हित में केंद्र सरकार की बड़ी कार्रवाई

7 हजार कीटनाशक कंपनियों के रजिस्ट्रेशन किए कैंसिल

इंदौर (कृषक जगत)। गत दिनों किसानों के हित में केंद्र सरकार ने बड़ी कार्रवाई करते हुए 7 हजार से अधिक कीटनाशक कंपनियों के रजिस्ट्रेशन कैंसिल कर दिए हैं। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि सरकार ने इन कंपनियों के लिए केवाईसी कराना अनिवार्य कर दिया था। जाँच के बाद 7 हज़ार से अधिक कीटनाशक कंपनियों द्वारा केवाईसी की प्रक्रिया को पूरा नहीं करने से इनके रजिस्ट्रेशन कैंसिल कर दिए हैं। इस कार्रवाई से कीटनाशक के नाम पर किसानों के साथ फर्जीवाड़ा करने वाली कंपनियों पर रोक लग जाएगी।

सभी जानते हैं कि भारत के किसान हर साल रबी, खरीफ व जायद फसलों में खेती में बेहतर पैदावार पाने के लिए खाद-बीज और कीटनाशकों पर बहुत खर्च करते हैं। किसानों को कृषि आदान उपलब्ध कराने के लिए देश में करीब 10 हज़ार आदान कंपनियां कार्यरत हैं। लेकिन बड़ी संख्या में किसानों की फसल नकली खाद-बीज व कीटनाशकों के कारण हर साल बर्बाद होती है। किसानों की इस गंभीर समस्या पर विचार कर केंद्र सरकार ने कीटनाशक कंपनियों के लिए केवाईसी कराना अनिवार्य कर दिया था। जिसकी जांच में कुल 9958 कीटनाशक कंपनियों में से 2585 कंपनियों द्वारा ही केवाईसी कराई गई,शेष 7373 कंपनियों के द्वारा केवाईसी नहीं कराए जाने से इनके रजिस्ट्रेशन कैंसिल कर दिए हैं। कीटनाशक कंपनियों के लिए केवाईसी अनिवार्य किए जाने से सरकार के पास प्रत्येक कंपनी का डेटा आ जाएगा और शिकायत मिलने पर तुरंत कार्रवाई की जा सकेगी। साथ ही नकली कीटनाशक की बिक्री पर अंकुश लगेगा।

दवा कंपनियों को बिजनेस करने के लिए सेंट्रल इंसेक्टीसाइड्स बोर्ड एंड रजिस्ट्रेशन कमेटी (सीआईबीआरसी) से रजिस्ट्रेशन कराना अनिवार्य है। अगर कोई कंपनी रजिस्ट्रेशन नहीं कराती है तो वह वैध रूप से बिजनेस नहीं कर सकती है। अब सरकार ने इसमें केवाईसी का नियम भी जोड़ दिया है। जो कंपनी अपना केवाईसी नहीं कराएगी उसका रजिस्ट्रेशन रद्द हो जाएगा। केंद्र ने इस संबंध में राज्य सरकारों को यह निर्देश भी दिया गया है कि जिन कंपनियों का रजिस्ट्रेशन कैंसिल हुआ है, उनके उत्पादों की बिक्री नहीं होनी चाहिए।

उल्लेखनीय है कि केंद्रीय कीटनाशक बोर्ड और पंजीकरण समिति (सीआईबीआरसी) ने कीटनाशकों के व्यापक पंजीकरण (सीआरओपी) पोर्टल में 'अपनी कंपनी को जानें' (केवाईसी) आवश्यकता में बदलाव के संबंध में सार्वजनिक नोटिस जारी किए गए थे। क्रॉप पोर्टल भारत में कीटनाशकों के पंजीकरण के लिए एक वेब-आधारित एप्लिकेशन है।

सीआईबीआरसी भारत में कीटनाशक पंजीकरण के लिए आवेदकों द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों की समीक्षा करता है। डोजियर में कीटनाशक की रासायनिक संरचना, विषाक्तता, प्रभावकारिता और पर्यावरणीय प्रभाव जैसी जानकारी शामिल होनी चाहिए। पंजीकरण प्रमाणपत्र देने से पहले यह सुनिश्चित करने के लिए कि कीटनाशक सुरक्षा और प्रभावशीलता मानकों को पूरा करता है, इस हेतु सीआईबीआरसी अपने स्वयं के परीक्षण भी करा सकती है।

19 अप्रैल 2024 को रजिस्ट्रेशन कमेटी की बैठक डॉ. पी. के. सिंह, एग्रीकल्चर कमिश्नर एवं चेयरमेन रजिस्ट्रेशन कमेटी की अध्यक्षता में हुई थी, जिसमें यह निर्णय लिया कि जिन आवेदकों ने दिनांक 03.01.2024 के सार्वजनिक नोटिस के परिपालन में आरसी अनुमोदित प्रोफार्मा के अनुसार अपेक्षित जानकारी प्रदान की है, केवल उन्हीं उपयोगकर्ता खाते के संबंध में अन-फ्रीजिंग और विलय अनुरोधों पर विचार किया जाएगा। अन्य जो अपेक्षित डेटा प्रदान करने में विफल रहे हैं उन्हें अब से निष्क्रिय कर दिया जाएगा और प्रमाण पत्र, परमिट आदि को रद्द माना जाएगा। इस आशय की सूचना राज्यों के कृषि निदेशक को उनकी ओर से आवश्यक जानकारी के लिए और सार्वजनिक सूचना भी सीआईबी एंड आरसी के सचिवालय द्वारा जारी की जाएगी।

कीटनाशक संगठन का पक्ष - दूसरी तरफ एक प्रमुख कीटनाशक संगठन ने कृषक जगत को बताया कि लाइसेंस कानून के प्रावधानों के अनुसार जिन कीटनाशक कंपनियों ने केवाईसी नहीं करवाया है, उनके रजिस्ट्रेशन कैंसिल नहीं किए जा सकते हैं।

लोकसभा निर्वाचन-2024

फिलीपीन्स, श्रीलंका का दल मध्यप्रदेश में चुनाव देखने आएगा

भोपाल। भारतीय लोकतंत्र के महापर्व लोकसभा आम निर्वाचन-2024 की संपूर्ण प्रक्रिया का अवलोकन करने के लिये भारत निर्वाचन आयोग द्वारा विभिन्न देशों के डेलीगेशन को अलग-अलग राज्यों में भेजा जा रहा है। इसी अनुक्रम में मध्यप्रदेश में फिलीपीन्स और श्रीलंका का 11 सदस्यीय डेलीगेशन भोपाल आयेगा। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी श्री अनुपम राजन ने बताया कि फिलीपीन्स के 'कमीशन ऑन इलेक्शन्स' की एसोसिएट कमिश्नर सुश्री सोकोरो बी. इंटिंग के नेतृत्व में 3 सदस्यीय डेलीगेशन भोपाल आयेगा।

श्री राजन ने बताया कि यह दोनों डेलीगेशन सात मई को भोपाल, सीहोर, रायसेन और विदिशा जिले के मतदान केन्द्रों में मतदान प्रक्रिया का मौके पर जाकर अवलोकन करेगा।

कम हुई गेहूं की .... (प्रथम पृष्ठ का शेष)

इस वर्ष उत्पादन : केंद्रीय कृषि मंत्रालय के अनुमान के मुताबिक, गेहूं का उत्पादन वर्ष 2023-24 में 1,120.19 लाख टन होगा, जबकि पिछले वर्ष में यह 1,105.54 लाख टन था। कुछ राज्यों में उम्मीद से अधिक पैदावार होने पर उत्पादन लगभग 1,150 लाख (115 मिलियन) टन तक भी पहुंच सकता है।

एफसीआई की खरीद : सूत्रों के मुताबिक एफसीआई, ने विभिन्न राज्यों के करीब 16 लाख किसानों से 2,275 रुपये प्रति क्विंटल के न्यूनतम समर्थन मूल्य पर 45,000 करोड़ रुपये का गेहूं खरीदा है। पंजाब और हरियाणा में इस समय आवक अच्छी है एफसीआई को पंजाब से 130 लाख टन और हरियाणा से 70 लाख टन की खरीद की उम्मीद है। परन्तु 30 अप्रैल तक पंजाब में 90.4 लाख टन गेहूं की खरीद हुई है जबकि गत वर्ष अब तक 103 लाख टन हुई थी। इसी प्रकार हरियाणा में 61.2 लाख टन गेहूं खरीदा गया है जो गत वर्ष के 57.6 लाख टन से कुछ अधिक था। वहीं उत्तर प्रदेश में 5.6 लाख टन एवं राजस्थान में 4.1 लाख टन गेहूं खरीदा गया है। वर्ष 2023 के अब तक के 219.5 लाख टन के मुकाबले इस वर्ष 2024 में मात्र 196.2 लाख टन गेहूं खरीदा गया है। इस प्रकार लगभग 23 लाख टन की खरीदी में कमी आई है।

श्री धुर्वे सीएट के प्रभारी संचालक बने

भोपाल। कृषि संचालनालय में पदस्थ अपर संचालक श्री बी.एस. धुर्वे को राज्य स्तरीय कृषि विस्तार एवं प्रशिक्षण संस्थान (सीएट) के संचालक का अतिरिक्त प्रभार सौंपा है। उन्होंने पदभार ग्रहण कर लिया है। ज्ञातव्य है कि श्री के.पी. अहिरवाल के निधन के बाद से संचालक सीएट का पद रिक्त था।

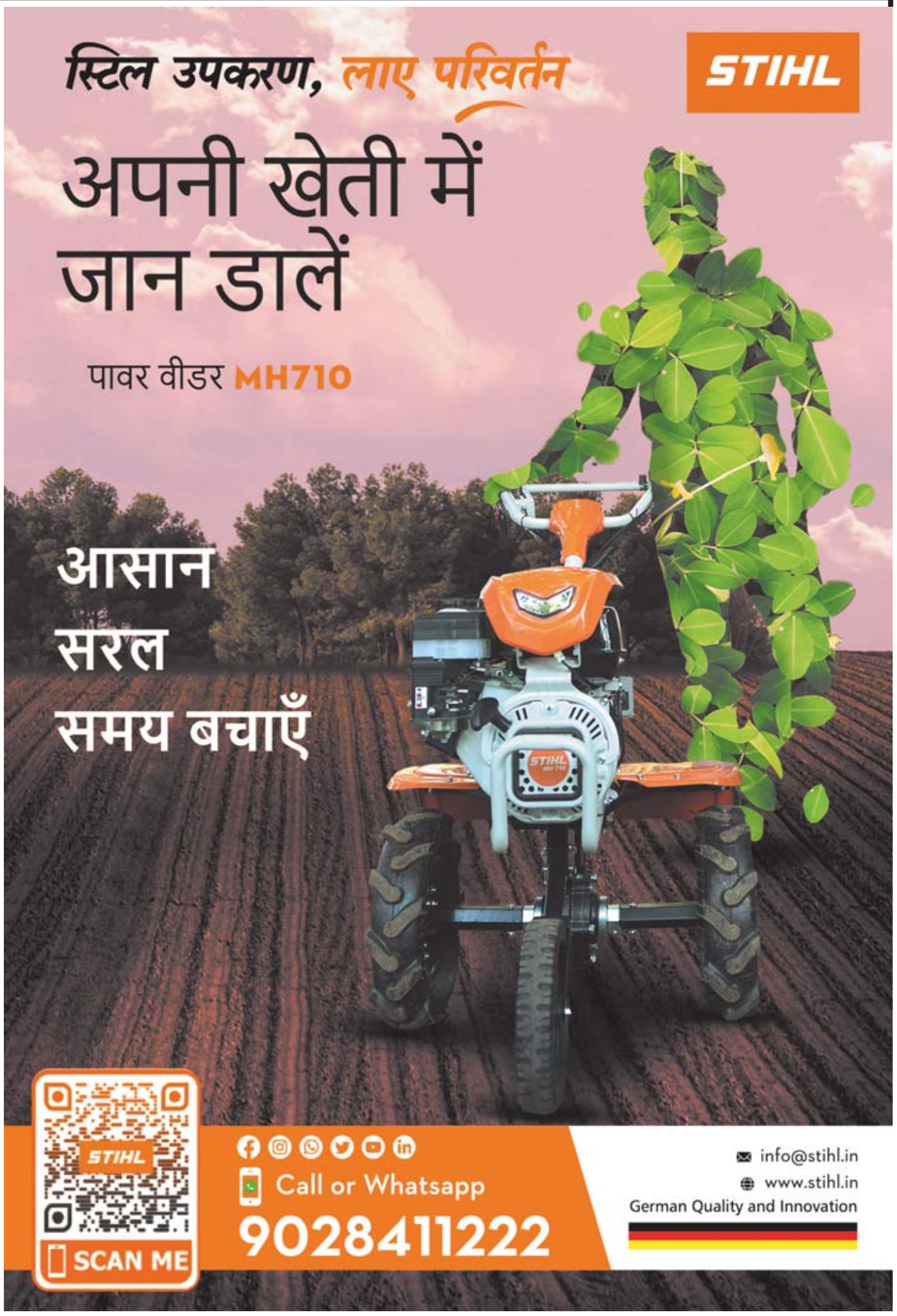

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक **विजय कुमार बोन्द्रिया** द्वारा 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल से प्रकाशित एवं कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, भोपाल (मध्य प्रदेश) से मुद्रित, **सम्पादक : सुनील गंगराड़े,** फोन : 0755-4248100, 2554864, फैक्स : 0755-2571449. E-mail-info@krishakjagat.org इस अंक का मूल्य रु. 12/- वार्षिक शुल्क रु. 600/-.भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक कार्यालय का पंजीयन क्रमांक 1832/57

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

कृषक जगत
संस्थापक : स्व. माणिकचन्द्र बोन्द्रिया - स्व. सुरेशचन्द्र गंगराड़े

अमृत जगत

मित्रता करने में शीघ्रता मत करो,
परन्तु करो तो अन्त तक निभाओ। - सुकरात

अनाज भण्डारण की आवश्यकता

विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं से जूझकर खेत में खड़ी फसल को काटने और सहेजने का समय आ चुका है। अनाज उत्पादन जितना आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण उसका भण्डारण होता है। भण्डारण के महत्व को भूलना ठीक उसी प्रकार होगा जैसे किसी नाटक का सुखान्त अथवा दुखान्त। कटाई-गहाई के बाद अनाज को खूब अच्छी तरह से सुखाना उसके लम्बे भण्डारण के लिये आवश्यक है। अनाज में नमी कीटों के आक्रमण तथा विस्तार के लिए सहायक होती है। देहातों में अनाज को भरने की जल्दी होती है। मौसम के मिजाज का सिकंजा सर पर रहता है। धूप में सूखे अनाज को भरने का कार्य शाम के ठण्डे वातावरण में किया जाना चाहिए क्योंकि गरम-गरम अनाज कोठियों में भरकर उपलब्ध हवा में नमी को निर्माण करने में सहायक होगा। यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि जमीन के नीचे खुदे बंडों की साफ-सफाई तथा गोबर से लिपाई भण्डारण के 10-15 दिन पहले ही निपटा दी जाना चाहिए ताकि वह पूरी तरह सूख जाये। इसी प्रकार मिट्टी की कोठियों को भी सफाई करके ही भण्डारण के लिए उपयोग में लाया जाना चाहिए। वर्तमान में लोहे की कोठियां उपलब्ध हैं जो भण्डारण के लिये सर्वोत्तम होती हैं। इनकी भी सफाई करना जरूरी होता है। आजकल पूसा कोठियां जो कम लागत में तैयार हो जाती है में भण्डारित अनाज लम्बे समय के उपरान्त भी अच्छे अंकुरण के बीज उपलब्ध कराता है। ये कोठियां पूर्णतया हवाबंद होती हैं और

बाहर की फफूंदी, कीटों को प्रवेश नहीं होने देती हैं क्योंकि इनके अंदर की दीवार मिट्टी की रहती है। लोहे की कोठियों की तुलना में इनका तापमान भी कम रहता है जिससे रखे अनाज की गुणवत्ता तथा अंकुरण क्षमता कायम रहती है। केन्द्रीय तथा राज्य शासन के अथक प्रयास के बावजूद भी उत्पादित अनाज के लिये समुचित भंडारगृहों का निर्माण आज भी आवश्यकता से बहुत पीछे है निजी तौर पर भी ग्रामीण अंचलों के आसपास सैकड़ों भंडारगृह तैयार किये गये हैं। फिर भी आये दिन समाचार पढ़ने में आता है कि हजारों बोरे अनाज वर्षा की चपेट में आ गया। इस कारण आज भी दूर-दराज के गांवों में भंडारण के पुराने तरीकों को नहीं बदला जा सका है। जरूरत तो अब केवल इतनी ही है कि भण्डारण के पुराने साधनों में यथा सम्भव कुछ ऐसे परिवर्तन किये जा सकें ताकि कुल मिलाकर अनाज भण्डारण के दौरान होने वाली क्षति पर रोक लगाई जा सके। विशेषकर घुन और चूहों को भंडारित अनाज से दूर रखा जा सके।

वर्तमान में सड़क मार्गों पर शीतगृहों का भी निर्माण होने लगा है। कोल्ड स्टोरेज का उपयोग महंगा हो गया है, इस कारण सभी इसका उपयोग नहीं कर सकते हैं। केवल सब्जियां एवं फलों के भण्डारण के लिए इनकी उपयोगिता है। आलू को विशेषकर शीत भण्डारण की जरूरत रहती है प्याज तथा लहसुन का भण्डारण स्थानीय विधियों में कुछ परिवर्तन करके ग्रामीण स्तर पर भी रखा जा सकता है और खर्च में कमी की जा सकती है। भण्डारण कोठियों में ई.डी.बी. का उपयोग कीटों की रोकथाम के लिए जरूरी होता है। 3 मि.ली. प्रति क्विंटल बीज के हिसाब से इसका उपयोग लाभकारी होता है। उल्लेखनीय है कि किसी भी फसल का उपसंहार उसके सफल भण्डारण में छिपा रहता है। इसके सुखान्त से प्रगति होती है और भविष्य में उपयोग के लिए स्वस्थ बीज उपलब्ध रहता है। इस कारण भण्डारण को पूरी गम्भीरता से लिया जाना चाहिए।

सरकार मसाला डोसा पकाने की विधि

चुनाव से पहले आजमाइए और मजे से खाइए

● ध्रुव शुक्ल, मो. : 9425201662

सबसे पहले देश ही जनता को टुकड़ों में बांट लें। हिन्दू, मुसलमान, दलित, आदिवासी और पिछड़ी जनता के नाम पर उसके पांच टुकड़े तो कर ही लें। चाहें तो उनकी अलग-अलग ढेरियां बना लें, जैसे सब्जियां का थोक व्यापार करने वाले व्यापारी सब्जी मण्डी में आलू, प्याज, टमाटर, भिण्डी और बैंगन की ढेरियां लगाते हैं। वे आलू को प्याज में और प्याज को टमाटर में कभी लुढ़कने नहीं देते।

सब्जियां भले ही अलग-अलग भाव पर तौली जाती हों पर वे सांभर में उसी तरह हिल-मिल जाती हैं जैसे चुनाव जीतने के बाद हर जात-बिरादरी के फुटकर नेता। वे सत्ता की गली हुई दाल के सांभर रूपी स्वीमिंगपूल में तैरने लगते हैं और जनता ऐसे सूखने लगती है जैसे मैथी की भाजी। इसीलिए चुनाव के समय जनता को थोड़ी गीली रखें। उसे अपने संप्रदाय का भजन सुनाकर उस पर झूठी आशाओं का पानी ज़रूर छिड़कते रहें।

अपनी इच्छा के अनुसार टुकड़ों में बंटी हुई जनता से वोट झटक लेने के बाद आप अपने मन का सरकार मसाला डोसा और सांभर पकाने के लिए स्वतंत्र हो सकते हैं। सत्ता का सांभर पकाने के लिए आपका कामन मिनिमम प्रोग्राम का यूनाइटेड प्रेशर कुकर बढ़िया होना चाहिए।

चुनाव जीतते ही गठबंधन के तवे पर स्वार्थी एकजुटता के चुल्लू भर पानी का जोरदार किंचा मारिए और अपनी-अपनी खाली कटोरी के पेंदे से एक ऐसा गरमा-गरम संसदीय दल का नेता पूरे तवे पर फैलाइए जो अपनी आगोश में सारे आलुओं और प्याज को पहले ही ले सके। सबकी खाली कटोरी नारियल की चटनी से भर सके। सरकार मसाला डोसा में अल्पसंख्यक काजू और महिला आरक्षण की किशमिश भी दिखना चाहिए। उसमें किसा हुआ निर्दलीय नारियल भी ज़रूर होना चाहिए।

तो लीजिए बन गया...सरकार मसाला डोसा। अब उसकी रुमाल की तरह तहें बना लें और उसके चारों तरफ़ बैठकर उसे उसी तरह खायें जैसे मंत्रिमण्डल की बैठक में तले हुए काजू पर टूट पड़ते हैं। कभी-कभार अंदाज ठीक न रहने से सब्जियां ज्यादा कट जाती हैं और वे सत्ता के सांभर में तैरने की आस लगाये रहती हैं। उनकी इच्छा होती है कि वे सत्ता का सलाद ही बन जायें।

सांभर एक ऐसा व्यंजन है जिसमें तैरती भांति-भांति की सब्जियां दलीय एकता के भ्रम में डाले रहती हैं। सरकार मसाला डोसा की बगल में कटोरी में भरा हुआ सांभर ऐसा दिखता है जैसे कोई मंत्री मण्डल हो। कभी सत्ता की गली हुई दाल में तैरती कमल ककड़ी का स्वाद भी निराला ही होता है। अगर राजनीतिक मौसम के अनुरूप सब्जियों का गठबंधन न हो पाये तो बैंगन की छत्रछाया में अकेली पड़ गयी लौकी सत्ता के सांभर के स्वीमिंगपूल में तैरने को विवश होती है।

आप एक बार में खूब सारा सांभर पका लें जिसमें डुबाकर पूरे पांच साल सरकार मसाला डोसा खाया जा सके। मजे से पकाइए। सत्ता तो वातानुकूलित होती है। वहां तो सड़े हुए को भी सुरक्षित रखा जा सकता है। इतना जरूर है कि सरकार मसाला डोसा पकाने के लिए जिस जनता को टुकड़ों में बांटा जाता है उसका जीवन उमस और बदबू से भरी सब्जी मण्डी जैसा हो जाता है।

कृषक जगत ◆ 60 साल पूर्व इस सप्ताह ◆

(कृषक जगत : 10 मई 1965 के अंक से)

समाचार/आलेख

- जनसंख्या में अतुलनीय वृद्धि : विश्व की खाद्य-स्थिति पहले से अधिक गंभीर
- जिलाधीशों को गेहूं खरीदने का आदेश, 40 हजार टन गेहूं का क्रय पूर्ण
- राष्ट्रीय उत्पादन परिषद : कृषक जगत के प्रधान संपादक श्री माणिकचंद्र बोन्द्रिया आमंत्रित
- गुना जिला परामर्श समिति की बैठक
- अखिल भारतीय खरीफ फसल प्रतियोगिता 1965-66 : प्रथम विजेता को कृषि पंडित
- विदर्भ के 7 जिलों के लिए 20 अरब रुपए की सिंचाई योजनाएं

आलेख

- उर्वरक के उपयोग से खाद्यान्न में आत्मनिर्भरता
- अग्रगण्य अंगूर उत्पादक अन्ना साहेब शेम्बेकर

विज्ञापन : दि धरमसी मोरारजी केमिकल कंपनी लि., हवाबाण हरडे, सुराना के पापड़, भोपाल प्रोसेस स्टूडियो, अशोक एंड कंपनी

फसल उत्पादन में जैव उर्वरक का महत्व

- अंजली त्रिपाठी, आईएफटीएम विश्वविद्यालय मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश
- गीता, श्री विश्वकर्मा कौशल विश्वविद्यालय, पलवल, हरियाणा

फसल उत्पादन में सूक्ष्म जीवों का अधिक महत्व इसलिए है क्योंकि सूक्ष्म जीवों द्वारा पौधों को वातावरण में उपस्थित नाइट्रोजन, मृदा में उपस्थित पोषक तत्व की उपलब्धता, साथ ही सूक्ष्म जीवों द्वारा मृदा में डाले गये खरपतवारनाशक, कीटनाशक, फफूंदनाशक आदि रसायनों को भी अपघटन प्रक्रिया द्वारा इनका प्रभाव कम करने में भी सहायक होते हैं। इस समय फसलों की उत्पादकता में ठहराव तथा गिरावट का दौर शुरू हो चुका है। अच्छा उत्पादन और अधिक आर्थिक लाभ प्राप्त करने के लिए हमें संतुलित रासायनिक उर्वरकों के साथ-साथ अच्छे कार्बनिक खाद तथा जैव उर्वरकों का उपयोग भी करना होगा। जैव उर्वरक सस्ते व वातावरण को नुकसान नहीं पहुंचाने वाले होते हैं। जैव उर्वरकों को उनकी प्रकृति व कार्य के आधार पर मुख्य रूप से पांच श्रेणियों में बांटा जा सकता है -

नाईट्रोजन स्थिर करने वाले जैव उर्वरक: इसमें मुक्त बैक्टीरिया जैसे की एजोटोबैक्टर, एनाबिना वायवीय व क्लोस्ट्रीडियम अवायवीय, सहजीवी (Symbiotic) राईजोबियम, फ्रैन्किया, साहचर्य सहजीवी-एजोस्पाईरिलम एवं एन्डोफाइटिक ग्लुकोनो सिटोबैक्टर बैक्टीरिया मुख्य रूप से आते हैं।

एजोटोबैक्टर-एजोटोबैक्टर जीवाणु खाद्यान्न फसलों के साथ-साथ सब्जी वाली फसलों की जड़ों में वातावरण में उपस्थित नाइट्रोजन को स्थिर करने का कार्य करते हैं। इसके साथ ये पौधों में वृद्धि करने वाले पदार्थ जैसे कि विटामिन बी, IAA, GA, थाईमिन, राइबोफ्लेवीन प्रोईरिडोक्सीन व पेन्टोथेनिक एसिड पैदा करते हैं। इसके अलावा ये पौधों की बीमारियों को जैव नियंत्रक के रूप में भी रोकते हैं। इसके उपयोग से फसल पैदावार में 15-20 प्रतिशत तक वृद्धि होती है। इनके द्वारा विभिन्न फसलों में 20-40 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर तक नाईट्रोजन स्थिर होती है जिससे लगभग 20 प्रतिशत नाइट्रोजन उर्वरकों की खपत कम हो जाती है। इसके अलावा ये पौधों में फफूंदी द्वारा होने वाले कई रोगों के लिए प्रतिरोधक क्षमता उत्पन्न करते हैं एवं बीजों की अंकुरण क्षमता भी बढ़ाते हैं।

राईजोबियम : यह जीवाणु मुख्यत: दलहनी फसलों में नाइट्रोजन स्थिरीकरण का कार्य करते हैं। दलहनी फसलों में कुछ गांठें पाई जाती हैं और इन गांठों में उपस्थित जीवाणु वायुमंडल में उपलब्ध नाईट्रोजन का स्थिरीकरण करके पौधों को पोषण प्रदान करते हैं। ये 60 से 120 किलो नाईट्रोजन प्रति हेक्टेयर मृदा में एकत्रित कर सकते हैं। इनकी सात मुख्य प्रजातियां होती हैं जो दलहनी फसलों के लिए विशिष्टकृत होती हैं जैसे राईजोबियम लेग्युमिनोसेरम मटर के लिए, राईजोबियम मेलिलोटाई मैथी के लिए और राईजोबियम फेजियालाई फ्रेंचबीन के लिए।

एजोस्पाईरिलम: यह पौधों की जड़ों में चिपके रहते हैं। यह भी नाइट्रोजन स्थिरीकरण के अलावा पौधों में वृद्धि करने वाले पदार्थ उत्पन्न करते हैं। ये 10 से 40 किलो तक नाईट्रोजन प्रति हेक्टेयर स्थिर करके 20 से 25 प्रतिशत नाइट्रोजनयुक्त रासायनिक उर्वरकों की बचत करते हैं ।

स्फुर घोलक जैव उर्वरक: बहुत सारे बैक्टीरिया और कवक मिट्टी में उपलब्ध अघुलनशील फास्फोरस को घुलनशील फास्फोरस में बदल देते हैं जिसको पौधे आसानी से अवशोषित कर लेते हैं।

स्फुर विलयकारी: स्फुर विलयकारी के रूप में जाना जाने वाला महत्वपूर्ण माईकोराइजा का निर्माण कवक के द्वारा होता है। ये पौधों की जड़ व मृदा के बीच में प्रमुख कड़ी भी भूमिका निभाते हैं। माइकोराइज़ा पौधों को पोषक तत्व उपलब्ध कराकर बदले में कार्बन ग्रहण करती है। ये पौधों को विपरीत परिस्थितियों जैसे कि लवणता, भारी धातु प्रदूषण से भी बचाने में सहायता करते हैं।

पौधों की वृद्धि को बढ़ावा देने वाले बैक्टीरिया: पीजीपीआर इनोकुलेंट पौधों की वृद्धि को पौधों में होने वाली बीमारियों की रोकथाम, उन्नत पोषक तत्व अधिग्रहण, (जैविक खाद) पादप हार्मोन उत्पन्न करते हैं। पीजीपीआर (PGPR) को पादप हार्मोन उत्पन्न करने वाले व जैव उद्दीपक के नाम से जाना जाता है। ये इन्डोल एसिटिक अम्ल, साईटोकायनिन, जिर्बेलीन एवं इथाईलिन रोधक उत्पन्न करते हैं।

जैव उर्वकों को उपयोग करने की विधि

बीजोपचार: एक बर्तन में 250 मिली पानी में 50 ग्राम गुड़ और 50 मिली जैव उर्वरक मिलाकर अच्छी तरह घोलते हैं। इसके बाद एक बर्तन में 10 किलोग्राम बीज लेकर उसमें घोल अच्छी तरह मिलाते हैं तथा बीजों को हाथों से उलटते रहते हैं। इस बीज को छायादार स्थान में 20-30 मिनट सुखाकर बुवाई की जाती है।

- पैदावार में वृद्धि होती है। पर्यावरण मित्र होते हैं। ये सस्ते होते हैं।
- एजोटोबैक्टर से उपचारित पौधों में सूत्रकृमि की बीमारी से बचने की क्षमता होती है।
- मिट्टी की बनावट व उर्वराशक्ति बढ़ती है।
- मिट्टी से होने वाले रोगों की रोकथाम करते हैं।
- बीजों की अंकुरण क्षमता में वृद्धि होती है।

एकदम अपना प्रभाव नहीं दिखाते, परन्तु कुछ समय उपरान्त परिणाम बहुत अच्छे होते हैं।

निष्कर्ष: जैव उर्वरकों को फसल में नाइट्रोजन उपलब्ध कराने व फास्फोरस विलेयक के रूप में ही प्रयोग किया जाता है किन्तु इनके उपयोग से फसलों को अनेक वृद्धि नियामक रसायन भी मिलते हैं जिन्हें साधारण पौधे सीधे ग्रहण करने में असमर्थ होते हैं। रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से मृदा की उर्वराशक्ति लगातार क्षीण होती जा रही है जोकि टिकाऊ खेती के लिए खतरनाक साबित हो रही है। टिकाऊ कृषि उत्पादन हेतु आज आवश्यकता इस बात की है कि हम कैसे मृदा स्वास्थ्य को बनाये रखने के लिए जैव-उर्वरकों का योगदान भुला सकते हैं क्योंकि ये पर्यावरण के मित्र भी हैं और हर प्रकार से अपना प्रभाव, बिना प्रर्यावरण को प्रदूषित करे, इसकी उर्वरकता बढ़ाने में सहयोग करते हैं।

भा. कृ. अनु.प.- भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान की सलाह

सोयाबीन लगाने वाले किसान खेत की जुताई करें

सोयाबीन फसल के लिए 3 वर्षो में एक बार खेत की ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करना उत्पादन स्थिरता एवं आर्थिक की दृष्टि से लाभकारी होता हैं। इसी प्रकार एकल किस्म की खेती के स्थान पर न्यूनतम 2-3 किस्मों की खेती करने में जोखिम कम होती हैं। अत: कृषकगण यथासंभव ध्यान दे.

खेत की तैयारी: कृषकों को सलाह है कि 3 वर्षों में एक बार अपने खेत की ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करें और विपरीत दिशाओं में दो बार कल्टीवेटर एवं पाटा चलाकर खेत को तैयार करें। विगत वर्षों में गहरी जुताई किये जाने पर केवल विपरीत दिशाओं में कल्टीवेटर (बखरनी) एवं पाटा चलाकर खेत तैयार करने की सलाह हैं।

कार्बनिक खाद का प्रयोग: पोषण प्रबंधन के लिए, अंतिम बखरनी से पूर्व गोबर की खाद (5-40 टन/हे.) या मुर्गी खाद (2.5 टन/हे.) को खेत में फैलाकर अच्छी तरह मिला दें।

वर्षाजल के समुचित उपयोग हेतु सब सॉइलर का प्रयोग: संभव होने पर 5 वर्ष में एक बार अपनी सुविधा अनुसार अंतिम बखरनी से पूर्व 40 मीटर के अंतराल पर सब-सॉइलर चलायें, जिससे वर्षा जल खेत की गहरी सतह तक जा सके और सूखे की अनपेक्षित स्थिति फसल को नमी मिलती रहे। साथ ही इससे मिट्टी की कठोर परत तोड़ने में तथा नमी का संचार अधिक समय तक रखने में सहायता मिलती है।

किस्मों का चयन: अपने जलवायु क्षेत्र के लिए अनुकूल विभिन्न समयावधि में पकने वाली न्यूनतम 2-3 नोटिफाइड सोयाबीन की किस्मों का चयन कर बीज उपलब्धता सुनिश्चित करें। ऐसे किसान जो सोयाबीन के बाद आलू, प्याज, लहसुन जैसी फसल लेकर गेहूं/चना लगाते हों,

सोयाबीन की शीघ्र समयावधि वाली किस्म को लगायें। उसी प्रकार वर्ष में केवल दो फसलें लेने वाले कृषक मध्यम/अधिक समय परिपक्वता अवधि वाली किस्मों का चयन करें।

अंकुरण परिक्षण: बीज की गुणवत्ता (न्यूनतम 70 प्रतिशत अंकुरण) एवं बीज दर निर्धारण हेतु उपलब्ध बीज का अंकुरण परिक्षण करें।

बोवनी/दूरी: उत्पादन की दृष्टि से प्रति हेक्टेयर पौध संख्या अत्यंत महत्वपूर्ण बिंदु है। अत: सोयाबीन फसल के लिए अनुशंसित 45 सेमी कतारों पर तथा 5-10 सेमी पौधों की दूरी पर बोवनी करें।

बीज दर: सोयाबीन में बड़े आकार के बीज की तुलना में छोटे या माध्यम आकार के बीज की अंकुरण क्षमता अधिक होती हैं। अत: न्यूनतम 70 प्रतिशत बीज अंकुरण, बीज का आकार एवं अनुशंसित दूरी को ध्यान में रखकर 60-75 किग्रा/हे. बीज दर अपनाना उत्पादन एवं आर्थिक दृष्टि से लाभकारी होगा।

बुवाई विधि: कृषकों को सलाह है कि जहाँ तक संभव हो सोयाबीन की बोवनी बी.बी.एफ. (चौड़ी क्यारी प्रणाली) या (रिज-फरो पद्धति) कूढ़-मेड़-प्रणाली से करें।

मशीनीकरण: सोयाबीन की खेती के लिए उपयोगी अन्य यंत्र (सीड ड्रिल, स्प्रेयर, आदि) की मरम्मत कर समय पर उपयोग योग्य रखे।

आदान उपलब्धता: सोयाबीन की खेती के लिए आवश्यक आदान (बीज, खाद-उर्वरक, फफूंदनाशक, कीटनाशक, खरपतवारनाशक, जैविक कल्चर आदि) का क्रय एवं उपलब्धता सुनिश्चित करें।

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

800-900 रु. किलो बिकने वाले मखाने की खेती क्यों नहीं कर रहे किसान ?

मखाना, जिसे फॉक्सनट के नाम से भी जाना जाता है, की खेती आमतौर पर स्थिर जल निकायों जैसे तालाबों, भूमि के गड्ढों, शांत पानी वाली झीलों, दलदलों और पानी से भरी खाइयों में की जाती है। इन क्षेत्रों को पूरे वर्ष 1-1.5 मीटर की लगातार पानी की गहराई बनाए रखनी होती है। यह पौधा आर्द्र से उप-आर्द्र परिस्थितियों में पनपता है, जिसमें इष्टतम हवा का तापमान 20 से 35 C तक होता है। 50-90 प्रतिशत की सापेक्ष आर्द्रता और 100-250 सेमी के बीच वार्षिक वर्षा इसके विकास के लिए अनुकूल है।

मखाना की खेती बहुत श्रम गहन है और कटाई की प्रक्रिया में कोई मशीनीकरण नहीं है। किसान को पानी के तालाब में उतरकर हाथ से कटाई करनी पड़ती है। कटाई तो बस शुरुआत है। मुख्य कार्य तब शुरू होता है जब काटे गए बीजों को सफेद छोटी गेंद में डालने के लिए गर्म किया जाता है जिसे मखाना कहा जाता है, यह एक लंबी मैन्युअल प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया बहुत श्रमसाध्य लगती है लेकिन इसका प्रतिफल अधिक है। मखाना की लगभग 90% खेती बिहार में होती है, जहां लगभग 38 हजार हेक्टेयर में खेती होती है और इसमें लगभग 60,000 किसान शामिल हैं। इसकी उपज 12-20 क्विंटल/ हेक्टेयर होती है और 700-800 रुपये/किग्रा बिकती है।

मखाने की खेती

मखाना एक स्व-परागणित पौधा है जो मुख्य रूप से बीज प्रसार के माध्यम से प्रजनन करता है। प्रति हेक्टेयर भूमि में बुआई के लिए औसतन 90-100 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है। बुआई का सही समय आमतौर पर दिसंबर में होता है। मखाना के बीज पानी के अंदर (हाइपोगेल) अंकुरित होते हैं, और पौधों के उचित घनत्व को बनाए रखने के लिए अलग-अलग पौधों के बीच एक मीटर की दूरी के साथ पतलापन किया जाता है।

अप्रैल से जून तक पानी की सतह पर बड़े-बड़े गोल पत्ते तैरते हुए देखे जा सकते हैं, जो मखाना के पौधों के बढ़ने का संकेत देते हैं। फूल और फल मई और अक्टूबर-नवंबर के बीच आते हैं। फूल आने की अवस्था के दौरान शीघ्र निषेचन सफल स्व-परागण और फलों के विकास को सुनिश्चित करता है। फल फूल आने के 35-40 दिनों के भीतर पूर्ण परिपक्वता तक पहुँच जाते हैं।

मखाना/फॉक्सनट बीजों की कटाई के बाद का प्रसंस्करण

- कटाई के बाद, ताजा साफ किए गए फॉक्स नट बीज प्रसंस्करण चरणों की एक श्रृंखला से गुजरते हैं। प्रारंभ में, नमी की मात्रा को लगभग 25 प्रतिशत तक कम करने के लिए उन्हें लगभग 2-3 घंटों तक धूप में सुखाया जाता है। सुखाने की यह प्रक्रिया बीजों का बेहतर संरक्षण सुनिश्चित करती है। इसके बाद, इष्टतम नमी प्रतिशत के साथ सूखे बीजों को समान ताप और पॉपिंग सुनिश्चित करने के लिए वर्गीकृत किया जाता है।
- बीजों की ग्रेडिंग के लिए विभिन्न आकार की लकड़ी की फ्रेम वाली छलनी का उपयोग किया जाता है। इन छलनी के छिद्रों का आकार अलग-अलग होता है, अधिकतम व्यास 12 मिमी से लेकर न्यूनतम 4 मिमी तक होता है। यह ग्रेडिंग प्रक्रिया बीजों के आकार में एकरूपता प्राप्त करने में मदद करती है।
- प्रसंस्करण के अगले चरण में प्री-हीटिंग शामिल है। धूप में सुखाए गए और श्रेणीबद्ध बीजों को मिट्टी के घड़े या लोहे की कड़ाही में लगातार हिलाते हुए गर्म किया जाता है। यह प्री-हीटिंग प्रक्रिया बीजों को अगले चरणों के लिए तैयार करती है।
- प्री-हीटिंग के बाद, बीजों को 48-72 घंटों की अवधि के लिए परिवेशी परिस्थितियों में संग्रहीत किया जाता है। यह नमी को स्थिर करने की अनुमति देता है और इस प्रक्रिया को 'टेम्परिंग' के रूप में जाना जाता है।

- अंत में, पहले से गरम और तड़का हुआ बीज 300°C के तापमान पर भूना जाता है। पॉप्ड मखाना प्राप्त करने के लिए उन्हें लकड़ी के हथौड़े का उपयोग करके तोड़ा जाता है, जिसे मखाना लावा भी कहा जाता है। पॉप्ड मखाने की रिकवरी दर आमतौर पर लगभग 40-42 प्रतिशत है। औसतन, 100 किलोग्राम बीज से लगभग 38-40 किलोग्राम पॉप्ड नट्स प्राप्त होते हैं।
- उचित भंडारण सुनिश्चित करने के लिए, पॉप्ड मखाने को प्लास्टिक से ढके बोरों में पैक किया जाता है। यह पैकेजिंग लंबे समय तक उत्पाद की ताजगी और गुणवत्ता बनाए रखने में मदद करती है।
- कटाई के बाद प्रसंस्करण के इन चरणों का पालन करके, पॉप्ड मखाने को इसके स्वाद और पोषण मूल्य को बरकरार रखते हुए लंबे समय तक संग्रहीत किया जा सकता है।

कृषि महाविद्यालय छात्रों ने बनाई पोषण वाटिका

● भगवत शरण असाटी
कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केंद्र, छुईखदान

घर के पीछे में खाली पड़े हुए स्थान पर सब्जियों एवं छोटे फलदार पौधों को इस तरह उगाकर प्रबंध करना, कि एक परिवार के 5-6 सदस्यों को वर्षभर वहां से ताजी सब्जी एवं फल प्राप्त होता रहे, ऐसी वाटिका को पोषण वाटिका कहते हैं। रानी अवंती बाई लोधी कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र छुईखदान के चतुर्थ वर्ष के छात्रों ने मॉड्यूल प्रोग्राम के अंतर्गत कॉलेज फार्म में गृह वाटिका की स्थापना डॉ. बी. एस. असाटी (एसोसिएट प्रोफेसर वेजिटेबल साइंस) एवं अधिष्ठाता डॉ. ए. के. गुप्ता के नेतृत्व में की। ग्रामीण लोगों के आहार में धान्य पदार्थो (अन्न) की अधिकता रहती है, जिससे उनको सिर्फ ऊर्जा उपलब्ध हो पाती है, इसके लिए आवश्यक है कि उनके आहार में फल, सब्जियां आदि की आपूर्ति कर संतुलित किया जाये, विभिन्न वर्ग के पुरुष, महिला तथा बच्चों के संतुलित आहार में अनुमोदित हरी पत्ती तथा अन्य सब्जियों एवं फलों की मात्रा भिन्न होती है। संतुलित आहार के अभाव में कई कुपोषण संबंधी बीमारियां हो जाती हैं। संतुलित भोजन हेतु एक वयस्क व्यक्ति को प्रतिदिन फल 85 ग्राम, सब्जियां 300 ग्राम जिसमे हरी सब्जियां 125 ग्राम, जड़ वाली सब्जियां 100 ग्राम अन्य प्रकार की सब्जियां 75 ग्राम की आवश्यकता होती है।

गृह वाटिका के लाभ

- सालभर ताजा फल एवं सब्जियों की प्राप्ति होती है।
- रसायन मुक्त फल एवं सब्जियां खाने को मिलती हैं।
- पैसे की बचत होती है।
- पूजा के लिए ताजा फल एवं फल उपलब्ध होते हैं।

जहाँ तक पोषण वाटिका के आकार का संबंध है, तो वह जमीन की उपलब्धता, परिवार के सदस्यों की संख्या और समय की उपलब्धता पर निर्भर होता है। लगातार फल चक्र, सघन बागवानी और अंत :फसल खेती को अपनाते हुए औसत परिवार में जिसमे 1 औरत, 1 मर्द व 3 बच्चे यानी कुल 5 सदस्य हों, ऐसे परिवार के लिए औसतन 250 वर्ग मीटर की जमीन काफी है। इसी से अधिकतम पैदावार ले कर पूरे साल अपने परिवार के लिए फल एवं सब्जियां प्राप्ति की जा सकती है। पोषण वाटिका के लिए शुरू में पूरी जमीन की गहरी जुताई कर दें। मिट्टी में कंकड़-पत्थर एवं खरपतवार भली प्रकार निकाल दें। क्यारियां बना लें। क्यारियों में कम्पोस्ट एवं गोबर की सड़ी खाद का भरपूर प्रयोग करें। यदि भूमि में दीमक का प्रकोप हो तो नीम खली या क्लोरोपायरीफास का प्रयोग करें। पोषण वाटिका में फसल -चक्र के अनुसार निश्चित समय पर ही बीज अथवा नर्सरी को लगायें। बीज बोने के चार सप्ताह बाद नर्सरी तैयार हो जाती है। इसी अधार पर अपनी आवश्यकतानुसार बीज बोए जा सकते हैं। सब्जियों के बीज या पौधे की बुवाई अथवा रोपण छोटी- छोटी क्यारियां बनाकर करें।

फलदार वृक्षों हेतु मई में गड्ढा तैयार करें एवं खाद, उर्वरक भराई उपरान्त मानसून आने पर जून-जूलाई में रोपण करें। पपीते की रोपाई फरवरी माह में करें। केले की रोपाई हेतु जुलाई-अगस्त माह उपयुक्त है। फलदार पौधे लगाने के लिए पौधों के आकार के अनुसार ही गड्ढे बनाए जाते हैं। प्रत्येक गड्ढे में 2-10 टोकरी कम्पोस्ट या गोबर की खाद तथा एक किलो मिश्रित उर्वरक मिलाकर भर देते हैं। गड्ढे की मिट्टी बैठ जाने के बाद ही पौधे लगाते हैं। इससे पौधे की वृद्धि अधिक होती है व फल जल्दी आता है।

पोषण वाटिका में सिंचाई का महत्वपूर्ण स्थान है भूमि की जरूरत के अनुसार ही सिंचाई करें। तेजी से बढ़ने वाली सब्जियों की फसलों को नियमित सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। अधिक सिंचाई हानिकारक होती है। बाड़ी में जल-निकासी का उचित प्रबंध हो रसोई एवं स्नान -गृह के निकासी जल का नालियों या पाईप के माध्यम से गृह वाटिका में सिंचाई हेतु सदुपयोग किया जा सकता है। फलों एवं सब्जियों के पौधों की वृद्धि के लिए समय-समय पर थालों एवं क्यारियों की निराई-गुड़ाई करते रहें। इससे खरपतवार नष्ट हो जाते हैं और फसल की जड़ों में अधिक वायु मिलती है। सूखी पत्तियों या धान के पैरे का पलवार बिछा कर खरपतवार को नियंत्रित तथा नमी को संरक्षित किया जा सकता है।

वाटिका से फल एवं सब्जियों की तुड़ाई आवश्यकता अनुसार ही करें ताकि भोजन के समय रोज ताजे फल व सब्जियां मिल सकें। सब्जियों को प्रौढ़ होने रोज ताजे फल व सब्जियों को पहले ही तोड़ लें। अन्यथा उनकी गुणवत्ता एवं मिठास में कमी आ जाती है। यदि गृह वाटिका में फल,सब्जी अधिक हो जाएं तो फलों से जेली, जैम या स्कैश बनाकर व कई सब्जियों को वैज्ञानिक तकनीक द्वारा धूप में सुखाकर संरक्षित भी किया जा सकता है। फसलों को रोगों से बचाने के लिए बीज रोपने के पहले उन्हे फफूंदनाशक (बाविस्टीन/थीरम) या जैविक फफूंदनाशी से उपचारित कर लेने से फसल पर रोग का प्रकोप कम होता है। फल एवं सब्जियों को रोग से बचाने के लिए गो-मूत्र एवं जैविक खादों का प्रयोग करें। कीटों से बचाव के लिए नीम तेल के घोल, नीम खली, नीमपत्ती, नीम पावडर आदि का ही प्रयोग करें। जहां तक संभव हो रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग गृह वाटिका में न करें। बाड़ी (वाटिका) से निकलने वाली शाकीय कचरे को नाडेप विधि से कम्पोस्ट खाद या केंचुओं द्वारा गुणवत्ता वाली खाद बनाएं तथा वाटिका में फल -सब्जी बुवाई/रोपण के समय उपयोग में लाएं।

पौधों का चुनाव एवं गड्ढे का आकार

फसल	प्रजाति	गड्ढे का आकार (मी.)
आम	आम्रपाली	1×1×1
अनार	भगवा, गणेश	0.45×0.45×0.45
पपीता	सनराईज सोलो, रेड लेडी	0.60×0.60×0.60
मुनगा	पी.के.एम.-1,पी.के.एम.-2	0.75×0.75×0.75
अमरूद	लखनउ-49, इलाहाबादी सफेदा, ललित	0.75×0.75×0.75
केला	ड्वार्फकेवेन्डीस, जी.-9	0.75×0.75×0.75
नींबू	कागजी नींबू, प्रमालीनी	0.75×0.75×0.75
मीठा नीम	लोकल सलेक्शन	0.75×0.75×0.75

ट्रैक्टर का रखरखाव एवं सावधानियाँ

ट्रैक्टर एक बहुत ही उपयोगी शक्ति का साधन है तथा इसमें लागत भी काफी ज्यादा लगती है जो कि किसानों को हर स्तर पर काम आता है। अतः इसकी देखभाल भी समय-समय पर करनी चाहिए। इससे यह लम्बे समय तक कार्य करता है, कोई बाधा भी नहीं आती तथा यह जल्दी ख़राब भी नहीं होता है। ट्रैक्टर का रख रखाव प्रतिदिन, साप्ताहिक, एवं मासिक रूप से करना चाहिए।

ट्रैक्टर चालन से जुड़ी कुछ खास बातें

एअर फिल्टर

इसका मुख्य कार्य इंजन में जाने वाली हवा की सफाई करना होता है । चूँकि खेत की हवा में बहुत धूल के कण तथा खरपतवार के छोटे टुकड़ों के कण भी होते हैं। जिन्हें इंजन में जाने से पहले साफ़ करना जरुरी होता है।

इसकी यूं विशेषता आप समझ सकते हैं कि एक लीटर डीजल के लिए इसको 9 हजार लीटर हवा साफ़ करनी पड़ती है। अगर सफाई अच्छी एवं समय पर न हो तो इंजन को नुकसान पहुँच सकता है, लगभग सभी ट्रैक्टर कम्पनियाँ इसके नियमित साफ़ सफाई की सिफारिश करती हैं। आजकल सभी ट्रैक्टर में तेल (आयल) बाथ हवा सफाई (एयर क्लीनर) तंत्र होता है। इसमें हवा तेल में से होकर गुजरती है जिससे कि छोटे कण तथा अन्य गन्दगी तेल के द्वारा जज्ब हो जाते हैं ।

अतः तेल को एक हफ़्ते में बदल दें। अगर तेल की तली पर 5 मिलीमीटर से ज़्यादा धूल के कण जमा हैं हो तो इसे अवश्य ही बदल दें तथा इस फिल्टर की सफाई 125 से 250 घंटे काम करने के बाद अच्छी तरह से डीजल से धोकर करें।

क्रैंककेस में भी धूल के कण तेल में मिल जाते हैं। अतः इसकी भी समय-समय पर सफाई कर लें। इस से इंजन अच्छी तरह से काम करेगा एवं इंजन अधिक समय तक सही रहेगा।

फ्यूल ऑपरेशन सिस्टम

इस तंत्र के तहत ईंधन टैंक, पाईप, पंप तथा इंजेक्टर आते हैं जिनका मुख्य कार्य टैंक से ईंधन को उचित समय, दबाव युक्त करके नोज़ल द्वारा पिस्टन के ऊपर या कम्प्रेसन चेम्बर में पहुँचाना होता है। कहा तो यह भी जाता है कि प्रत्येक 200 घंटे कार्य के बाद ही टैंक एवं सभी हिस्सों को बढ़िया से सफाई कर लेनी चाहिए।

ईंधन को प्रत्येक दिन, कार्य के बाद पूरी तरह से भर लेना चाहिए, क्योंकि यह आंशिक या पूरी तरह से खाली रहता है तो इसमें मौजूद हवा रात में कम तापमान होने पर इसकी आर्द्रता जल में परिवर्तित हो जायेगी तथा यह तेल की तली में इकट्ठी हो जाएगी एवं इस ईंधन तंत्र के अलग-अलग भागों में पहुँच कर उन्हें नुकसान पंहुचा सकती है। इसके फ़िल्टर को हमेशा साफ़-सफाई के साथ बदलें।

कूलेंट

किसी भी आंतरिक दहन (IC) इंजन को ईंधन के जलने से ही शक्ति मिलती है, लेकिन पावर स्ट्रोक के दौरान सिलिंडर का तापमान लगभग 1600°C तक पहुंच जाता है जोकि इंजन के किसी भी हिस्से को गला (नुकसान) सकता है, इसलिए इंजन का तापमान प्रबंधन बहुत ही जरुरी है।

तापमान का अत्यधिक कम या ज्यादा होना दोनों ही स्थिति, इंजन के कार्य क्षमता को प्रभावित करती है। अतः इंजन के कूलेंट का तापमान 80-90°C ही उचित माना जाता है। ट्रैक्टर में तापमान प्रबंधन दो तरह से किया जाता है हवा और द्रव प्रवाह द्वारा।

कूलिंग सिस्टम की तैयारी

- साफ़ और ताजा पानी ही रेडीयेटर में भरा जाना चाहिए एवं पानी को उपयुक्त तल तक हमेशा बनाये रखें।
- रेडीयेटर में नमक/चूना मुक्त जल का ही उपयोग करें, ताकि पाइप में स्केल न जम जाये।
- पुराने तथा गले और मुलायम हो चुके पाइप का प्रयोग नहीं करें।
- फैन/पंप के V-बेल्ट में 15 मिली मीटर से ज्यादा झुकाव नहीं हो, अगर इससे ज्यादा झुकाव हो तो इसे तुरंत कसें।
- अधिक गर्म इंजन में तुरंत ठंडा पानी नहीं डालें, नहीं तो सिलिंडर के दीवार में सुराख़ हो सकता है।

एयर कूल्ड प्रणाली

इस तरह के शीतलन प्रणाली में हवा की सफाई पर विशेष ध्यान रखा जाता है। इसमें वाटर पंप, रेडीयेटर, वाटर जैकेट, थर्मोस्टेट वाल्व, होज पाइप आदि की आवश्यकता नहीं होती है। इसका भार भी कम होता है, और जगह भी आवश्यकता कम होती है। लेकिन इसमें असमान शीतलन होता है और कार्य के दौरान इंजन का तापमान अधिक भी हो जाता है।

बैटरी

- बैटरी के इलेक्ट्रोलाइट को उपयुक्त अंतराल पर जांचना चाहिए। यदि विशिष्ट गुरुत्व 1.225 से कम हो तो इसे चार्ज किया जाना चाहिए।
- बैटरी में इलेक्ट्रोलाइट का स्तर बैटरी प्लेटों से 12 से 14 मि मी ऊपर ही होना चाहिए। यदि ऐसा नहीं है, तो बैटरी में डिस्टिल्ड वाटर डालें।
- बैटरी के ऊपरी सतह को साफ और सूखा रखें।
- बैटरी के क्लैम्प और टर्मिनलों को अधिक नहीं कसें।
- बैटरी के टर्मिनलों को निरंतर साफ करते रहें।
- बैटरी को अधिक चार्ज नहीं करें।

वाटर कूल्ड सिस्टम

वॉटर कूल्ड सिस्टम का प्रयोग होता है। इस तंत्र के मुख्य भाग वाटर पंप, रेडीयेटर, फैन, फैन बेल्ट, वाटर जैकेट, थर्मोस्टेट वाल्व, तापमान मापक, होज पाइप हैं।

इस प्रकार के कूलिंग सिस्टम में तरल पदार्थ इंजन के सिलिंडर के चारों ओर प्रवाहित किया जाता है, जो इंजन के तापमान को कम करता है। इस गर्म तरल पदार्थ या जल को रेडीयेटर के द्वारा ठंडा किया जाता है। लेकिन इस प्रणाली में जल का वितरण पाइप में नमक/चूना (स्केल) या बाहरी गंदगी के जम जाने के कारण बाधित हो सकता है और इंजन के तापमान बढ़ने का कारण बनता है।

नियमित अंतराल पर कूलिंग सिस्टम की सफाई करते रहें। इसके लिए एक किलो धोने का सोडा और आधा लीटर किरोसिन के तेल का 10 किलो पानी में मिलाकर एक घोल तैयार करें। रेडीयेटर में इस घोल को भरकर 8-10 घंटे तक छोड़ दें फिर मध्यम गति पर इंजन को चलायें, जब इंजन 15-20 मिनट के लिए चल जाये तो इस घोल को बाहर निकाल कर, रेडीयेटर को साफ पानी से धोयें।

लुब्रिकेशन सिस्टम

लुब्रिकेशन तंत्र का भी ट्रैक्टर चालन में अहम् योगदान है, इसके प्रमुख कार्य हैं। ट्रैक्टर के पिस्टन, सिलिंडर, बियरिंग्स में रगड़ से उत्पन्न ताप को कूलिंग के माध्यम से नियंत्रित करना एवं इनके बीच की रगड़ को कम करना।

लुब्रिकेंट्स सिलिंडर लाइनर, पिस्टन एवं पिस्टन रिंग में सीलिंग का काम करता है, ताकि सिलिंडर से गैस बाहर ना निकल जाये। लुब्रिकेंट्स ट्रैक्टर के इंजन से धूलकण और कार्बन कणों को अवशोषित कर अपने साथ बाहर निकाल इंजन की सफाई भी करता है।

- लुब्रिकेशन तंत्र में सही ग्रेड के तेल का ही प्रयोग करें, नहीं तो ये नुकसानदेह हो सकता है।
- लुब्रिकेशन तंत्र में तेल का स्तर, तेल स्तर गेज के ऊपरी और निचली रेखा के बीच ही हो।
- लुब्रिकेशन तंत्र में प्रयुक्त तेल को नियमित अंतराल पर बदल दें।
- पुराने फिल्टर्स का गन्दा होने पर इसे नए फिल्टर्स से बदल दें।
- लुब्रिकेशन तंत्र के पाइप, वाल्व, दबाव मापक की जाँच नियमित अंतराल पर करते रहें।

सुरक्षित ट्रैक्टर संचालन की खास बातें

- क्लच पेडल पर पैर रख कर न चलायें ।
- इंजन को कभी भी क्षमता से ज्यादा लोड न करें।
- बेयरिंग को उचित मात्रा में ही चिकनाई दें।
- किसी भी झटके से बचने के लिए क्लच पेडल को धीरे-धीरे छोड़ें।
- ट्रांसमिशन केस से तेल तभी निकालें जब इंजन गर्म हो।
- हमेशा टायर में हवा के दबाव को निर्माता द्वारा दिए हिदायत के अनुसार रखें।
- सामान्यतः खेत में कार्य करते समय टायर प्रेसर कम तथा रोड पर थोड़ा अधिक रखें।
- ट्रैक्टर चलाते समय टायर को अधिक स्लिप पर न चलाएं।

कृषक जगत द्वारा प्रकाशित फसल पुस्तक श्रृंखला

जैविक खेती समृद्ध कृषक 60/- | भण्डारण के वैज्ञानिक तरीके 40/- | एकीकृत कीट प्रबंधन 60/- | मधुमक्खी पालन 60/- | जायद फसलें 60/- | सरसों 50/- | मसाला फसलें 70/-

सदाबहार खेती 90/- | चना 60 | मृदा उर्वरता मैनुअल 60/- | खेती के उन्नत तरीके (खरीफ फसल) 60/- | खेती के उन्नत तरीके (रबी फसलें) 60/- | सोयाबीन अनुसंधान तकनीक 70/- | बाजरा की वैज्ञानिक खेती 50/-

रबी तिलहनी फसलें अलसी, कुसुम 60/- | मसूर, मटर एवं मोठ की उत्पादन तकनीक 60/- | लघु धान्य फसलों की उत्पादन तकनीक 50/- | कौशल विकास दिग्दर्शिका 60/- | गेहूं उत्पादन तकनीक 60/- | एकीकृत पौध पोषक तत्व प्रबंधन 60/- | पौध संरक्षण (खरीफ-रबी फसल सहित) 60/-

नाम .... ग्राम ....
पोस्ट .... तह. .... जिला ....
फोन/मोबा. ....कुल राशि......................
आॅर्डर की गई प्रतियों की संख्या/संलग्न ड्रॉफ्ट नं. ....
मनी ऑर्डर क्र. .... वी.पी. भेजें।

पांच पुस्तकें एक साथ खरीदने पर डाक खर्च मुफ्त

नोट : कृपया ड्राफ्ट या मनीआर्डर कृषक जगत भोपाल के नाम नीचे लिखे पते पर भेजें

प्रधान कार्यालय : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011
फोन: 0755-4248100,2554864, मो. : 9826255861
इंदौर :331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर,
मो. : 09826021837

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

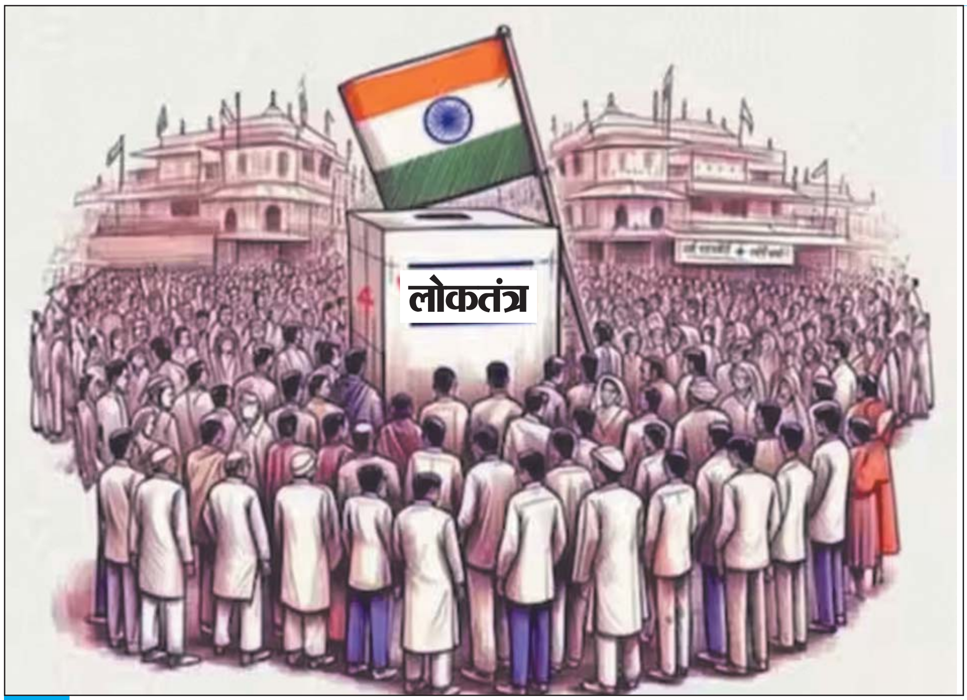

लोकतंत्र को कमजोर करता है, सांसदों का गैर जिम्मेदार आचरण

• विनोद के. शाह, स्वतंत्र पत्रकार
मो.: 9425640778
Shahvinod69@gmail.com

देश की निजी स्वयंसेवी संस्था एसोसिएशन फार डेमोक्रेटिक रिफार्स (एडीआर) द्वारा वर्तमान 17वीं लोकसभा के उपलब्ध कराए कामकाजी आंकड़े चौकाने वाले हैं। पांच सौ बयालीस सदस्य संख्या वाले लोकसभा के सदन में दो सौ तैंतीस सदस्य विभिन्न आपराधिक मामलों में लिप्त रहकर जनता द्वारा चुनकर आए थे। जिसमें से एक सौ उनसठ सांसदों पर जघन्य अपराध हत्या, हत्या के प्रयास, बलात्कार जैसे मामले दर्ज रहे हैं। केरल राज्य से चुनकर आए एक सांसद पर लगे दो सौ चार आपराधिक मामले लेकर सदन में पहुंचे थे। धनबल–बाहुबल एवं पार्टीगत लोकप्रियता के सहारे जनता से चुनकर देश के नीति–निर्माताओं की पंक्ति में शामिल होने वाले जनप्रतिनिधि जनहितैषी होने के बजाए स्वहितैषी कार्यो में लिप्त हो जाते हैं।

194 सांसदों पर आपराधिक मामले दर्ज

एडीआर रपट में सांसद जनप्रतिनिधियों द्वारा चुनाव पूर्व दाखिल हलकनामे से वर्तमान राज्यसभा एंव लोकसभा के 763 सांसदों की चरित्रावली का विश्लेषण किया है। इसमें 194 सांसदों पर गंभीर आपराधिक मामले दर्ज हैं। जिनमें ग्यारह सांसदों पर हत्या, बत्तीस पर हत्या का प्रयास, इक्कीस पर महिला उत्पीड़न एवं चार ने बलात्कार का आरोप पत्र लेकर विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के मंदिर में दाखिला लिया था। जिस विधायिका को कार्यपालिका सलामी भरती हो वहां दागी छबि वाले जनप्रतिनिधि रौब से ही कानून की अनुपालना को काफी हद तक प्रभावित कर लेते हैं। एडीआर की रिपोर्ट बताती है कि 17वीं लोकसभा में केरल राज्य से आए उन्तीस सांसदों में से तेईस एवं बिहार राज्य के छप्पन में से इकतालीस सांसद अपनी आपराधिक छवि के साथ लोकतंत्र के मंदिर में प्रवेश करने में सफल हुए थे।

संसद में प्रवेश उपरांत सदस्यों की देश के नीति निर्धारण में भूमिका आकलन करने पर 17वीं लोकसभा में सरकार द्वारा लाए गये पैंतीस फीसदी विधेयक सदन की मात्र एक घंटे से कम समयावधि में पारित कर दिए थे। इन विधेयकों पर संसद सदस्यों ने सरकार के साथ किसी भी प्रकार की चर्चा या प्रश्न करना उचित नहीं माना था। 17वीं लोकसभा 58 फीसदी विधेयक संसद में पेश किए जाने के दो सप्ताह के अंदर ही पारित कर दिये गये थे। जिससे प्रतीत होता है कि विधेयक को अधिकाधिक जनहितैषी एवं उपयोगी बनाने सदस्यों में अध्यन एवं सुझावों का अभाव रहा था। 17वीं लोकसभा के कार्यकाल में मात्र सोलाह फीसदी विधेयक ही विस्तृत समीक्षा हेतु समितियों के पास भेजे गये थे। यह कार्यावधि एक ऐसा मौका भी था जबकि विभिन्न संसदीय समितियों के पास बैठक करने कोई मुद्दे ही नहीं थे।

संसद की कार्यवाही का प्रति मिनिट व्यय ढाई लाख रुपए

देश के लिए संसद का बजट सत्र प्रतिवर्ष अतिमहत्वपूर्ण हुआ करता है। देश का प्रत्येक नागरिक इस सत्र पर अपनी आंखें टिकाकर इसलिए रखता है कि बजट सत्र की एक–एक चर्चा देश का नीति निर्धारण करती है। इस सत्र से सिर्फ देश के बजट का ही निर्धारण ही नहीं होता है। बल्कि उद्योग,व्यापार,शिक्षा,स्वास्थ्य की आगामी नीति का प्रारुप भी तय होता है। दुर्भाग्यवश 17वीं लोकसभा की पांच साल की अवधि के दौरान सभी बजट सत्र में औसतन बजट का अस्सी फीसदी हिस्सा बगैर किसी चर्चा के मात्र सदस्यों द्वारा मेजे बजाकर कर ही पारित कर दिया गया था। पांच वर्ष की संसद अवधि में मात्र 1116 प्रश्नों का जवाब संबंधित मंत्री द्वारा सदन में दिया गया है। शेष 55,889 प्रश्नों के लिखित जवाब मंत्रालय द्वारा सदस्यों को प्रेषित कर दिए गये थे। फलस्वरुप प्रश्नकर्ता सदस्य अपनी क्षमता एवं योग्यता को सदन एवं देश को अवगत कराने में असफल साबित हुआ है। सदन का अधिकांश समय हंगामा, अमर्यादित टिप्पणियों में ही व्यतीत हुआ है। संसद की कार्यवाही का प्रति मिनिट व्यय ढाई लाख रुपए हुआ करता है। यह सदन के बिजली,पानी, पेट्रोल, भोजन बिल,सदस्यों की सैलरी एंलाउंस, सुरक्षा पर होने वाले व्यय पर खर्च होता है। लेकिन सदन के सुचारु संचालन के बजाए सिर्फ हंगामा, अर्नगल टिप्पणियां जैसे कृत्यों पर ही सदन का समय नष्ट होना लोकतंत्र के लक्षण में नहीं है।

नारेबाजी करना अपनी योग्यता समझा

संसद का प्रश्नकाल एवं शून्यकाल सांसदों को सरकार से प्रश्न पूछकर उनकी योग्यता एवं क्षेत्र सहित राष्ट्र के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का प्रर्दशन करने का मौका देता है। लेकिन 17वीं लोकसभा के इस कालखंड से ही सर्वाधिक कार्यवाही स्थगित करने की सूचना दी गई थी। संसद में नियम विरुद्ध तख्तियां लेकर पहुंचना, काले कपड़े में सदन के अंदर का प्रदर्शन, पर्चे फेकना, सदन के गर्भगृह में पहुंचकर नारेबाजी करना ही अधिकांश सदस्यों ने अपनी योग्यता समझा है। नियमानुसार एक वर्ष में संसद के तीन सत्र मानसून,शीत एवं बजट की कुल अवधि सौ दिवस की तय मानी जाती है। उक्त अवधि पांच साल में पांच सौ दिन की बनती है। लेकिन 17वीं लोकसभा के जून 2019 से लेकर फरवरी 2024 की अवधि में मात्र 274 बैठकें ही सदन ही हो सकी हैं। इस अवधि में काम के निर्धारित तीन हजार घन्टों में से मात्र 1354 घन्टे ही कामकाज हो सका है। 17वीं लोकसभा के कुल पन्द्रहा सत्र में तेरहा का सत्र अवसान निर्धारित अवधि से पूर्व ही समाप्त किया गया है।

विश्व के सबसे बडे लोकतंत्र में 18वीं लोकसभा को चुनने देश में 19 अप्रैल 2024 से 1 जून 2024 के बीच 7 चरणों के मतदान को लेकर पूरे विश्व की निगाहें इस समय भारत पर हैं। महत्वपूर्ण इसलिए भी कि चुनाव से देश की आगामी नीतियों का निर्धारण होना है। देश के भविष्य की दिशा तय होनी है, लोकतंत्र का अर्थ जनता से, जनता द्वारा, जनता के लिए परिभाषित है, इसलिए देश के आम चुनाव में जनता का सर्वोपरि होना महत्वपूर्ण कारक है। लेकिन बाहुबल,धनबल एवं अपवाह के माहौल के बीच आदर्श जनप्रतिनिधि का चुनाव देश के लोकतंत्र के लिए हमेशा ही चुनौतिपूर्ण रहा है।

143 सांसदों का पूरी सत्र अवधि के लिए निलंबन

भारतीय संसद का इतिहास बजट सत्र में लम्बी–लम्बी चर्चा एवं सार्थक वहस का रहा है। लेकिन वर्ष 2023 में प्रस्तुत आम बजट बगैर किसी चर्चा के ही सदन ही पारित हुआ था। सत्र दौरान विपक्ष के 143 सांसदों का पूरी सत्र अवधि के लिए निलंबन हुआ था। शेष सांसदों की आम बजट पर कोई भी राय नही आयी थी। बीते मानसून सत्र में तेईस विधेयक बिना चर्चा के ही पास कर दिये गये थे। इसमें डेंटल कमीशन बिल, आईआईएम संशोधन बिल,वन संरक्षण बिल जैसे अति महत्व के बिलों पर संशोधन हेतु कोई चर्चा ही नहीं हुई है। प्रस्तुत डिजिटल डेटा प्रोटेक्शन बिल के प्रावधानों को लेकर देश का बुद्धिजीवी एवं कानून के जानकार चिंता के साथ विरोध कर रहे थे। क्षेत्रिय सांसदों से संसद में विरोध दर्ज कराने की मांग की थी। उक्त बिल पर संसद के मानसून सत्र में दो घन्टे पांच मिनिट की चर्चा में चौदहा सांसदों को बोलने दस मिनिट से अधिक समय नहीं दिया गया था। इसी मानसून सत्र में प्रश्नकाल मात्र एक बार ही तीस मिनिट से अधिक अवधि का रहा है। कानूनी निर्माण में सांसदों की चुप्पी लोकतंत्र को चिंता से भर देती है। संसद का वह भी इतिहास रहा जब बिल पेश करने से पूर्व सदस्यों को अध्ययन हेतु उपलब्ध कराया जाता था।

प्रत्येक सदस्य बिल अध्ययन के बाद संशोधन सुझावों के साथ व्यापक चर्चा में उपलब्ध राहता था। लेकिन अब संसद में बिल पारित होने बाद भी अधिकांश सांसद विषय से अनिभिज्ञ ही बने रहते हैं। जनप्रतिनिधियों से उपेक्षित रहे बिल कानून बनने के बाद भी जनमुखी नहीं हो पाते हैं। कानून बनने के बाद ऐसे कानूनो में बार–बार संशोधन भी करना पड़ता है। 17वीं लोकसभा में जनता द्वारा चुन कर आये वह नौ सांसद भी रहे है जिन्होंने पांच साल के कार्यकाल में बिना चर्चा, बगैर कोई प्रश्न उठाये या चर्चा में हिस्सा लिए बिना संसद में मौन रहकर क्षेत्र की आवाज को तिलांजली दी है।

18वीं लोकसभा का चुनाव दुनिया का सबसे महंगा चुनाव

सेंटर फार मिडिया स्टडीज के मुताबिक वर्तमान समय में सम्पन्न हो रहे 18वीं लोकसभा का चुनाव दुनिया का सबसे महंगा चुनाव साबित होने वाला है। जिसमें अकेले सरकार का 1.20 लाख करोड़ खर्च हो रहा है। सात चरणों के इस मतदान में देश के 97 करोड़ मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करने वाले हैं। जिसके लिए देशभर में 10.5 करोड़ पोलिंग बूथ का निर्माण के साथ 55 लाख ईवीएम का उपयोग होने जा रहा है। इस चुनावी प्रक्रिया सम्पन्न कराने 1.5 करोड़ कर्मचारियों सहित सुरक्षाकर्मियों की तैनाती भी होना है। लेकिन सम्पूर्ण आकलन में जनता द्वारा निष्क्रिय सदस्यों का चुनाव एवं चुने गये सदस्यों की क्षेत्रिय जनता के प्रति जवाबदेयी में अनदेखी, अनुशासनहीन आचरण विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की परिपक्तता को हास्यपद बनाता है।

टेक्सास एग्रो केमिकल्स का हुआ शुभारम्भ

इंदौर (कृषक जगत)। कृषि व्यवसाय के क्षेत्र में एक नया नाम टेक्सास एग्रो केमिकल्स प्रा. लि. का भी जुड़ गया, जिसका गत दिनों इंदौर में शुभारम्भ किया गया,जो स्वस्तिक ग्रुप से सम्बद्ध है। शुभारम्भ के इस मौके पर कम्पनी के समूह अध्यक्ष श्री वसंत परमार, प्रबंध संचालक श्री दिनेश शर्मा, महाप्रबंधक श्री विजय बाला, रेकोल्टो के श्री शैलेष कुलकर्णी सहित बड़ी

संख्या में डिस्ट्रीब्यूटर/डीलर उपस्थित थे।

श्री परमार ने कृषक जगत को बताया कि स्वस्तिक समूह कृषि क्षेत्र के अलावा मेडिकल, डेवलपर्स, इंफ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में भी सक्रिय है। ग्रुप का टर्न ओवर 960 करोड़ का है। आपने आशा व्यक्त की कि टेक्सास एग्रो केमिकल्स बहुराष्ट्रीय कम्पनी की तरह किसान बैठकें आयोजित कर किसानों का उत्पादन और आमदनी बढ़ाने में पूरा सहयोग करेगी, जो कम्पनी का मुख्य उद्देश्य है।

कम्पनी का लक्ष्य

श्री शर्मा ने नव गठित कम्पनी टेक्सास एग्रो केमिकल्स के दृष्टिकोण पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमारा लक्ष्य अन्नदाताओं को कृषि समाधान के रूप में उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद प्रभावी कीमतों पर उपलब्ध कराना है। विश्वास है कि सबके सहयोग से आगामी तीन साल में देश में अव्वल बनने के साथ ही टेक्सास एग्रो केमिकल्स 2050 तक वैश्विक पहचान बनाएगी।

70 उत्पादों की श्रृंखला

प्रबंध संचालक श्री शर्मा ने जानकारी दी कि कम्पनी के पास 70 उत्पादों की विशाल श्रृंखला है, जिनमें से 62 उपलब्ध हैं,जबकि 8 पाइप लाइन में हैं। श्री शर्मा ने आश्वस्त किया कि कंपनी उत्पादों की गुणवत्ता से कोई समझौता नहीं करेगी।

श्री बाला ने बताया कि नव गठित कम्पनी टेक्सास वस्तुत: स्वस्तिक एग्री साइंस ग्रुप की कम्पनी है, जो 1997 में आरम्भ की गई थी। जिसमें दो दर्जन से अधिक कंपनियां हैं। स्वस्तिक एग्री साइंस ग्रुप ने 2012 में भारत में 100 से ज्यादा स्व निर्मित उत्पाद बनाना शुरू किए जिनमें पेस्टीसाइड,हर्बी साइड, फंजीसाइड,हाइब्रिड बोलगार्ड कपास बीज, मूंगफली और सोयाबीन के बीज शामिल हैं। इस अवसर पर प्रारंभिक सहयोग के लिए कुछ प्रमुख विक्रेताओं को सम्मानित भी किया गया।

विद्युत शार्ट सर्किट को तुरंत ठीक कराएं

भोपाल। मध्यक्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी ने आमजन से आगाह किया है कि घर अथवा संस्थान में कहीं भी शार्ट सर्किट होने पर उसे हल्के में न लें, बल्कि तुरंत इलेक्ट्रिशियन को बुलाकर ठीक करवाएं। ऐसे में जरा सी असावधानी किसी बड़ी दुर्घटना का कारण बन सकती है। करंट से होने वाली दुर्घटनाओं की रोकथाम में आमजनों का भी सहयोग जरूरी है।

सस्ती वायरिंग से बचें

कंपनी ने कहा है कि यदि घरों में अर्थिंग नहीं है तो वायरिंग के पहले अर्थिंग जरूर दें। इसके साथ ही घटिया या सस्ती वायरिंग की बजाय मानक स्तर की वायरिंग करवाएं, जिससे शार्ट सर्किट से होने वाली हानि से बचा जा सके। एक अनुमान के मुताबिक ज्यादातर शार्ट सर्किट की घटनाएं या तो घटिया वायरिंग के कारण होती हैं या फिर ज्यादा समय से पुरानी वायरिंग होने के चलते शार्ट सर्किट की घटनाएं होती हैं। इसलिए जरा सी लापरवाही महंगी पड़ सकती है। बिजली कंपनी आम उपभोक्ता को पुरानी वायरिंग की जगह मानक स्तर की नई वायरिंग करवाने की सलाह देती है, जिससे शार्ट सर्किट की घटनाओं से बचा जा सके। विद्युत लाइनों से संबंधित किसी भी तरह की शिकायत हों तो तत्काल कॉल सेंटर के टोल फ्री नं. 1912 पर या उपाय एप एवं समीप के वितरण केन्द्र कार्यालय में सूचना अवश्य दें।

मध्यक्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी ने कहा है कि घरेलू विद्युत उपकरणों, वायरिंग, स्विच आदि को स्वयं सुधारने के बजाय किसी प्रशिक्षित इलेक्ट्रीशियन की सेवाएं लें। मानव जीवन अमूल्य है।

लोड चेक करें

स्वीकृत भार से अधिक लोड का उपयोग न करें। उचित क्षमता के एम.सी.सी.बी, कट-आउट लगाने के साथ ही अच्छी गुणवत्ता की वायरिंग का ही उपयोग करें।

वर्ष में एक बार अपने परिसर की वायरिंग, फिटिंग, अर्थिंग अनुभवी एवं दक्ष इलेक्ट्रीशियन से अवश्य जांच कराएं, ताकि शार्ट सर्किट की दुर्घटनाओं से बचा जा सके।

डॉ. दीक्षित को मिला एम.एस. स्वामीनाथन अवॉर्ड

इंदौर (कृषक जगत)। गत दिनों एग्रीमीट फाउंडेशन,चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं इक्रीसेट हैदराबाद के संयुक्त तत्वाधान में 'आत्मनिर्भर भारत के लिए हालिया प्रगति' विषय पर चुनाव के चलते अंतर्राष्ट्रीय वर्चुअल सम्मेलन आयोजित किया गया था जिसमें 400 से अधिक लोगों ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए। इस सम्मेलन में डॉ. अनिल दीक्षित को एम.एस. स्वामीनाथन अवॉर्ड से सम्मानित किया गया।

आईसीएआर - राष्ट्रीय जैविक स्ट्रेस प्रबंधन संस्थान, रायपुर के संयुक्त निदेशक डॉ. अनिल दीक्षित को उनके 30 वर्ष से अधिक के कार्यकाल में कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान में उत्कृष्ट योगदान हेतु एम.एस. स्वामीनाथन अवॉर्ड प्रदान किया गया।

उल्लेखनीय है कि डॉ. दीक्षित को हाल ही में इंडियन सोसायटी ऑफ एग्रोनोमी द्वारा गोल्ड मैडल से नवाज़ा गया था। डॉ. दीक्षित को उनके उत्कृष्ट योगदान हेतु सर्वोच्च सम्मान लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड से भी सम्मानित किया जा चुका है। गत दो वर्षों में डॉ. दीक्षित को राष्ट्रीय स्तर पर पांचवा पुरस्कार दिया जाना छत्तीसगढ़ के लिए गौरव की बात है। बता दें कि डॉ. दीक्षित हाल ही में एशियन पेसिफिक वीड साइंस कॉन्फ्रेंस में शोध पत्र प्रस्तुत करने थाईलैंड भी गए थे।

कृषि में क्रांतिकारी बदलाव लाएगा स्वॉइल डॉक्टर

इंदौर (कृषक जगत)। कृषि में अच्छे उत्पादन के लिए मिट्टी में मौजूद तत्वों की कमी के बारे में जानना बहुत जरूरी है, जिसका मिट्टी परीक्षण करवा कर पता

लगाया जा सकता है। यूँ तो कृषि विभाग की मिट्टी परीक्षण प्रयोगशालाओं में भी मिट्टी की जाँच की जा सकती है, लेकिन मिट्टी परीक्षण के त्वरित और सटीक नतीजे पाने के लिए कृषि प्रौद्योगिकी में अग्रणी, 'स्वॉइल डॉक्टर' ने एक अभूतपूर्व समाधान पेश किया है।

सिर्फ आधे घंटे में मिट्टी की जांच

इस संबंध में स्टार्टअप कंपनी इको साइट टेक्नोलॉजिस, दिल्ली की संचालिका सौम्या ने कृषक जगत को बताया कि नवाचारों से कृषि का परिदृश्य बदल रहा है। किसानों को सशक्त बनाने और मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन के माध्यम से पर्यावरणीय स्थिरता में योगदान देने के मिशन के साथ 2021 में स्थापित स्वॉइल डॉक्टर ने एक क्रांतिकारी मृदा परीक्षण उपकरण के रूप में एक अभूतपूर्व समाधान पेश किया है। यह उपकरण न केवल मिट्टी की संरचना का तेजी से विश्लेषण करता है, बल्कि एक मिट्टी के नमूने के लिए केवल आधे घंटे की अवधि के भीतर उर्वरक देने के लिए अनुरूप सिफारिशें भी प्रदान करता है। अब किसानों को अनुमान पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा। इसकी सटीक डेटा-संचालित अंतर्दृष्टि तक पहुंच है, जो पर्यावरणीय प्रभाव को कम करते हुए उनके कृषि कार्यों को अनुकूल बनाती है। इस तकनीक से अब किसानों को अपनी मृदा परीक्षण रिपोर्ट के लिए इंतजार करने की जरूरत नहीं है।

उपज में 12 प्रतिशत की बढ़ौत्री

उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा और राजस्थान राज्यों के किसानों ने इस नवाचार को अपनाया है, जिससे इनपुट लागत में 8% की उल्लेखनीय कमी और उपज में 12% की आश्चर्यजनक वृद्धि देखी गई है। किसानों को सलाह के साथ मिट्टी की जांच मात्र 300 रु में उपलब्ध है।

उल्लेखनीय है कि किसानों को सशक्त बनाने और मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन के माध्यम से पर्यावरणीय स्थिरता में योगदान देने के मिशन के साथ स्वॉइल डॉक्टर उपकरण की मदद से मिट्टी के स्वास्थ्य का प्रभावी ढंग से आकलन कर कृषि के तरीके में क्रांतिकारी बदलाव ला रहा है। स्वॉइल डॉक्टर की मृदा स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी की सफलता आधुनिक कृषि के सामने आने वाली चुनौतियों से निपटने में नवाचार के महत्व को रेखांकित करती है।

तकनीकी प्रगति के इस युग में, स्वॉइल डॉक्टर इस बात का उदाहरण है कि कैसे नवाचार का उपयोग कर किसानों को लाभ पहुंचाया जा सकता है। इको साईट जैसी कंपनियां कृषि क्षेत्र में आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रगति और समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करेंगी। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें - मो.: 8150085009

विनोद कृषि यंत्र जहाँ,
खुशहाल किसान वहां
विनोद
कृषि यंत्र
ग्रेन ग्रेडर+क्लीनर=क्वालिटी मेकर
बहुउद्देशीय हाइड्रो डोजर

आधुनिक, संतुलित, कुशल कृषि यंत्रों के निर्माता-
विनोद एग्रीकल्चर इंडस्ट्रीज
खरी फाटक - गल्ला मंडी रोड, विदिशा (म.प्र.)
मो. 9827211456

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

भाकृअनुप-केन्द्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान ने 'विश्व बौद्धिक संपदा दिवस' मनाया

भोपाल (कृषक जगत)। भा.कृ.अनु.प-केन्द्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान, भोपाल में विश्व बौद्धिक संपदा दिवस समारोह आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम 'बौद्धिक संपदा प्रबंधन: कृषि से कृषि व्यवसाय में परिवर्तन' विषय पर केंद्रित था, जिसमें चर्चाएं और प्रस्तुतियां हुई। डॉ. वी. भूषण बाबू, वरिष्ठ वैज्ञानिक और प्रभारी, संस्थान प्रौद्योगिकी प्रबंधन इकाई (आईटीएमयू) ने सभी गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। कार्यवाहक निदेशक डॉ. एस. मंगराज ने बौद्धिक संपदा प्रबंधन में संस्थान के प्रयासों पर प्रकाश डाला तथा कृषि एवं कृषि व्यवसाय में बौद्धिक संपदा की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित भी किया।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता भारतीय पेटेंट एजेंट और भारत सरकार के वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के लिए स्टार्टअप फैसिलिटेटर सुश्री अपर्णा पंढारकर थी। सुश्री पंढारकर ने पेटेंट और डिजाइन ड्राफ्टिंग और फाइलिंग पर अपना व्यापक ज्ञान साझा किया।

डॉ. मनोज कुमार त्रिपाठी, प्रधान वैज्ञानिक एवं मीडिया प्रभारी ने बताया कि प्रत्येक वर्ष, विश्व बौद्धिक संपदा दिवस आईपी से संबंधित एक विशिष्ट विषय पर केंद्रित होता है, जो क्षेत्र में मौजूदा मुद्दों और चुनौतियों का समाधान करता है। डॉ. पी. पी. अम्बालकर मुख्य तकनीकी अधिकारी ने समकालीन आईपी फाइलिंग प्रक्रियाओं की दक्षता और पहुंच को प्रदर्शित करते हुए आईपी अनुप्रयोगों की ऑनलाइन ई-फाइलिंग पर एक संक्षिप्त अवलोकन प्रदान किया। डॉ. उदय आर बडेगांवकर, प्रभारी टीटीडी ने बताया कि विश्व बौद्धिक संपदा दिवस उत्सव का उद्देश्य नवाचार और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने में बौद्धिक संपदा अधिकारों (आईपीआर) की भूमिका के बारे में जागरूकता बढ़ाना है। समापन में डॉ. वी. भूषण बाबू ने आभार व्यक्त किया।

बिजली चोरी की सूचना देने वालों को मिला 2 लाख का पारितोषिक

सीहोर (कृषक जगत)। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा बिजली चोरी की गुप्त सूचना देने वालों को अब 2 लाख रुपये का पारितोषिक दिया गया है। योजना में वर्ष 2022-23 एवं 2023-24 में लगभग 55 प्रकरणों में सूचना प्राप्त होने के उपरांत, 27 प्रकरणों में, अवैध बिजली की चोरी पाये जाने पर, बिल की राशि रूपये 20 लाख की शत-प्रतिशत वसूली होने पर, लगभग 2 लाख रुपये की पारितोषिक की राशि संबंधित सूचनाकर्ता के बैंक खाते में सीधे जमा की गई है।

कंपनी द्वारा विद्युत की चोरी के प्रभावी रोकथाम एवं विद्युत के अवैध उपयोग को रोकने के लिए यह योजना चलाई गई है। योजना अंतर्गत कोई भी व्यक्ति बिजली के अवैध उपयोग के संबंध में सूचना कंपनी मुख्यालय, क्षेत्रीय कार्यालय में मुख्य महाप्रबंधक, संचा. संधा/शहर वृत्त कार्यालय के महाप्रबंधकों को लिखित अथवा मोबाइल पर दे सकता है। कंपनी की वेबसाईट portal.pmcz.in पर ऑनलाईन सूचना देने की व्यवस्था की गई है। सफल सूचनाकर्ता को अथवा उपभोक्ता को विद्युत चोरी की क्षतिपूर्ति की पूर्ण राशि जमा होने पर, बिल की राशि के दस प्रतिशत की राशि को पारितोषिक राशि के रूप में दिये जाने की योजना जनवरी 2019 से प्रचलन में है।

योजना के अंतर्गत सूचनाकर्ता के संबंध में जानकारी पूर्णत: गोपनीय रखते हुए, कंपनी मुख्यालय से प्रोत्साहन की राशि सीधे संबंधित सूचनाकर्ता के बैंक के खाते में हस्तांतरित की जाती है। इस योजना के अंतर्गत क्षेत्रीय, वृत्त स्तर के अधिकारियों को जो शिकायतें प्राप्त होती है, शिकायतों पर तत्परता से कार्यवाही सुनिश्चित किये जाने के लिए कंपनी द्वारा सतत रूप से निगरानी रखी जाती है। फर्म, एजेंसी, संगठन भी सूचनाकर्ता हो सकते है, जिन्हें कंपनी मुख्यालय में पदस्थ नोडल अधिकारी के माध्यम से पंजीकरण कराना आवश्यक है।

पोर्टल अथवा उपाय एप पर देनी होगी सूचना - मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा बिजली चोरी की रोकथाम के लिए इनाम योजना सूचनाकर्ता को निर्धारित शर्तों के अधीन पारितोषिक देने का प्रावधान है। सूचना के आधार पर राशि वसूली होने पर सफल सूचनाकर्ता को 10 प्रतिशत राशि का भुगतान किया जाएगा। इस राशि की अधिकतम सीमा नहीं है। सूचनाकर्ता को प्रोत्साहन राशि कंपनी मुख्यालय द्वारा सीधे सूचनाकर्ता के बैंक खाते में जमा की जाएगी। प्रकरण बनाने एवं राशि वसूली करने वाले विभागीय अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी ढाई प्रतिशत राशि प्रोत्साहन के रूप में दी जाएगी। वर्तमान में इस व्यवस्था को पूर्ण रूप से ऑनलाइन किया गया है तथा कंपनी वेबसाइट portal.mpcz.in पर जाकर informer scheme लिंक पर क्लिक करके, सूचनाकर्ता के द्वारा गुप्त सूचना दर्ज की जा सकती है। इसके अतिरिक्त उपाय एप्प के माध्यम से भी बिजली चोरी की सूचना दी जा सकती है।

कामयाब किसान की कहानी

जामली के दिनेश ने ड्रैगन फ्रूट की खेती से जमाई धाक

(दिलीप दसौंधी, मंडलेश्वर)। कृषि में नवाचार करने में कई तरह की जोखिम रहती है, लेकिन जो किसान चुनौतियों का डटकर सामना करते हैं, अंतत: उन्हीं को सफलता मिलती है। ऐसी ही एक मिसाल जामली (महू) के उन्नत किसान श्री दिनेश पाटीदार ने पेश की है, जो क्षेत्र में विगत चार वर्षों से ड्रैगन फ्रूट की खेती सफलतापूर्वक कर रहे हैं। इस नई फसल से न केवल आय बढ़ी है, बल्कि क्षेत्र में उनकी धाक भी बढ़ी है।

ड्रैगन फ्रूट की जानकारी ली - ग्राम जामली तहसील महू जिला इंदौर के उन्नत किसान श्री दिनेश पाटीदार ने कृषक जगत को बताया कि जामली के अलावा ग्राम नांदेड़ और महेश्वर सहित कुल 80 एकड़ जमीन है। पूना कृषि प्रदर्शनी एवं अन्य कृषि कार्यक्रमों में ड्रैगन फ्रूट की खेती के बारे में पता लगने पर इसे करने का विचार आया। इसे शुरू करने से पहले अमरावती में उद्यानिकी विभाग के डॉ. सिंह से मिले। उन्होंने डॉ. श्रीनिवास राव का जिक्र किया, जो पेशे से डॉक्टर होने के बावजूद ड्रैगन फ्रूट के प्रमुख उत्पादक हैं। डॉ. राव से उनके सांगारेड्डी (हैदराबाद) स्थित फार्म पर मुलाकात की और ड्रैगन फ्रूट से संबंधित पूरी जानकारी ली मसलन किस्म कौनसी लें, मौसम और तापमान कैसा रहना चाहिए आदि। उन्होंने कहा ड्रैगन फ्रूट अधिकतम 44-45 डिग्री तक तापमान सहन कर लेता है। निमाड़ से सटा होने के कारण जामली में भी 42-43 डिग्री तक तापमान रहता ही है। इसलिए ड्रैगन फ्रूट लगाने की ठानी।

अधिकतम कीमत 180 रु किलो - श्री पाटीदार ने बताया कि चार साल पहले पहली बार ड्रैगन फ्रूट की सी-वेरायटी दो एकड़ में लगाई। ड्रैगन फ्रूट को दो विधियों पोल विधि और ट्रेलीस विधि से लगाया जाता है। ड्रैगन फ्रूट की तीन-चार किस्में होती हैं जैसे ऊपर से लाल अंदर से सफ़ेद, ऊपर और अंदर दोनों लाल और ऊपर से पीली अंदर से सफ़ेद निकलती है। जून-जुलाई में इसमें फूल आना शुरू हो जाते हैं। इसके बाद अगस्त-सितंबर में एक साथ फलोत्पादन होने लगता है। यह सीजन में औसत 130-140 रु/किलो बिकता है,

जबकि नवंबर से मार्च के ऑफ़ सीजन में यह अधिकतम 180 रु किलो तक बिकता है। अधिकतम माल इंदौर मंडी में ही बेचते हैं। इसके अलावा मुंबई और नासिक भी भेजा जाता है।

2 एकड़ में 4 टन का उत्पादन लिया - श्री दिनेश ने बताया कि 2 एकड़ में पहली बार लगाए ड्रैगन फ्रूट का उत्पादन 4 टन/एकड़ का मिला था, जबकि दूसरे साल 12 टन मिला, वहीं इस साल साढ़े सात टन/एकड़ का उत्पादन मिला। लगातार बढ़ते उत्पादन से उम्मीद है कि अगले साल यह आंकड़ा 10 टन/एकड़ तक पहुँच जाएगा। यह एक बहुवर्षीय फसल है, जिसमें आगे उत्पादन स्थिर हो जाता है और 10-12 साल तक वही उत्पादन मिलता रहता है। इसके अलावा श्री पाटीदार के यहाँ अमरुद की रेड डायमंड किस्म के 600 पेड़ और 16 एकड़ में सीताफल के पेड़ लगाए हैं, जिन्हें गर्मी में पानी देने की जरूरत नहीं होती है। इन फलों की बिक्री से भी लाखों में आय हो जाती है। उद्यानिकी फसल वाले कई किसान इनसे सलाह लेने आते रहते हैं। करीब 5 वर्ष पूर्व श्री पाटीदार ने एक बीघा में 120 क्विंटल अदरक का उत्पादन लिया था। इस पर इन्हें तत्कालीन केंद्रीय मंत्री श्री गिरिराज सिंह द्वारा पटना में 'श्रेष्ठ कृषक' से सम्मानित किया गया था।

उपार्जन केंद्र की आकस्मिक जाँच में गेहूं अधिक मिला

5 के खिलाफ प्रकरण तैयार

जबलपुर (कृषक जगत)। कलेक्टर श्री दीपक सक्सेना के निर्देश पर संयुक्त कलेक्टर एवं प्रभारी जिला आपूर्ति नियंत्रक श्रीमती नदीमा शीरी एवं सहायक आपूर्ति अधिकारी संजय खरे द्वारा पाटन तहसील के सेवा सहकारी समिति लुहारी के गेहूं खरीदी केन्द्र स्थल अमित स्टोरेज वेयर हाउस की आकस्मिक जाँच की गई। जाँच के दौरान पाया गया कि ई-उपार्जन पोर्टल पर मात्र 2 हजार 489 क्विंटल गेहूं की ही खरीद दर्ज है, जबकि गोदाम का भौतिक सत्यापन करने पर 6 हजार 743 क्विंटल गेहूं भण्डारित पाया गया। इस प्रकार स्टॉक में 4 हजार 254 क्विंटल गेहूं अधिक पाया गया। यह गेहूं बिना खरीदी किए तथा बिना हैंडलिंग चालान जारी किए भण्डारित किया जाना पाया गया। इन अनियमितताओं के कारण समिति प्रबंधक कृष्ण कुमार गर्ग, कम्प्यूटर आपरेटर यशवंत सिंह, वेयर हाउस मैनेजर अमित अग्रवाल, मार्कफेड के सर्वेयर नब्बू सिंह तथा वेयरहाउस के गोदाम प्रभारी मनोज श्रीवास के विरुद्ध प्रकरण तैयार किया गया है। विस्तृत जाँच में अन्य जो भी दोषी पाए जाएंगे, उन के उत्तरदायित्व का निर्धारण कर नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।

समस्या -समाधान

समस्या– शीघ्र पकने वाली अरहर की खेती करना चाहता हूं जिसके बाद गेहूं लिया जा सके। बीज, खाद, पकने की अवधि आदि की जानकारी देने का कष्ट करें।

– एस.के. पुरोहित

समाधान– आप अरहर लगाने के बाद गेहूं की खेती भी कर सकते हैं। इसके लिये आपको अरहर की जल्दी पकने वाली किस्म यूपीएएस–120 (120 से 130 दिन) या आईसीपीएल 151 (135–150 दिन) आदि किस्म लगानी होगी। बीज के लिये आप कृषि विभाग या आपके नजदीक कृषि विज्ञान केन्द्र या अनुसंधान केन्द्र से संपर्क साध सकते हैं। एक एकड़ के लिये लगभग 8–10 किलो बीज लगेगा।

खाद की मात्रा 12 किलो नत्रजन, 25 किलो स्फुर तथा 10 किलो पोटाश प्रति एकड़ मान से दें। स्फुर की मात्रा सुपर फास्फेट के रूप में दें तो इससे गंधक की आपूर्ति भी हो जायेगी। सभी खाद बुआई के पूर्व खेत में मिला दें या बुआई के समय दें। फूल की कलियां आते ही कीटनाशक डायमिथिएट या ट्राइजोफॉस (20 मिमी./15 लीटर पानी) का छिड़काव अवश्य करें और छिड़काव 15–15 दिन से दोहरायें। अन्यथा फसल पकने में 15–20 दिन और लग जायेंगे और आपकी गेहूं की बोनी में देर हो सकती है।

समस्या– सोयाबीन में बीजोपचार का क्या कोई लाभ है?

– रमेश वर्मा

समाधान – अधिकांश किसान सोयाबीन की खेती वर्षों से एक ही खेत में करते चले आ रहे हैं। लगातार खेती होने के कारण सोयाबीन के खेतों में सोयाबीन फसल के रोगों के जीवाणु, फफूंद भी भूमि व बीज में स्थापित हो गये हैं। सोयाबीन फसल के रोग भूमि व बीज जनित रहते हैं। फसल को रोगों से बचाने के लिए हमें भूमि तथा बीज जनित रोगों से फसल को बचाना होगा अत: बीजोपचार लाभकारी होगा।

● पौधों की प्रारम्भिक अवस्था में रोगों से बचाने के लिए बीज उपचार एक कम खर्च का साधन है। इसलिए बीज उपचार आवश्यक है।

● सोयाबीन के बीज को भूमि जनित रोगों से बचाने के लिए थायरम 2 ग्राम प्रति किलो बीज तथा बीज जनित रोगों से बचाने के लिए कार्बोक्सिन 2 ग्राम प्रति किलो बीज से उपचारित करें।

● थायरम तथा कार्बोक्सिन का मिश्रण बाजार में भी ा उपलब्ध करा रही है। इसका 2 ग्राम प्रति किलो बीज का उपयोग करने से फसल 20–25 दिन तक रोगों से सुरक्षित रहती है और प्रारम्भिक अवस्था में रोग के कारण नहीं मरते। बीजों का अंकुरण भी एक समान होता है।

● इससे उपचार 1–2 माह पूर्व भी किया जा सकता है।

समस्या– सोयाबीन में पोषक तत्वों की फसल को आपूर्ति क्या डीएपी देने से ही हो जाती है।

–समर सिंह

समाधान– ● सोयाबीन में डीएपी से सभी पोषक तत्वों की आपूर्ति नहीं होती है। डीएपी में 18 प्रतिशत नत्रजन व 46 प्रतिशत स्फुर (फास्फोरस) रहता है और वह इन्हीं दो तत्वों की आपूर्ति करता है।

● सोयाबीन के बीजों में 40 प्रतिशत प्रोटीन रहता है जिसको बनाने के लिए नत्रजन एक आवश्यक तत्व है। इसके लिए फसल को लगभग 250 किलो प्रति हे. नत्रजन की आवश्यकता होती है। 20 किलो प्रति हे. नत्रजन उर्वरक के रूप में देते हैं। इसकी शेष मात्रा लगभग 230 किलो प्रति हे. सोयाबीन के पौधों की जड़ों की गांठों में स्थित राइजोबियम बैक्टीरिया वातावरण से अवशोषित कर पौधों को उपलब्ध कराते हैं।

● नत्रजन व स्फुर के अतिरिक्त अब सोयाबीन में कहीं – कहीं पोटाश की कमी भी नजर आ रही है। इसकी कमी के कारण पौधों की पत्तियों के बाहरी किनारों पर पीलापन दिखाई देता है। इसकी आपूर्ति के लिए आप 20 किलो म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति हेक्टेयर के मान से अवश्य दें।

● सोयाबीन व अन्य तिलहनी फसलों में इन तत्वों के अतिरिक्त गंधक (सल्फर) को भी आवश्यकता होती है क्योंकि गंधक तेल बनाने की प्रक्रिया का एक आवश्यक तत्व है। इसकी आपूर्ति आप बिना अतिरिक्त खर्च के स्फुर की आपूर्ति डीएपी के स्थान पर सिंगल सुपर फास्फेट से करने लगे। इसमें 16 प्रतिशत स्फुर के साथ 12 प्रतिशत गंधक भी रहता है जो सोयाबीन में गंधक की आवश्यकता के लिए पर्याप्त है।

समस्या – आम मालफार्मेशन के प्रमुख लक्षण तथा कारण बतायें।

– सुरेश मालवीय

समाधान – आम मालफार्मेशन के बारे में वर्तमान तक कारण विशेष की जानकारी की पुष्टी नहीं हो सकी है। यह बीमारी उत्तरी

भारत, विशेषकर पंजाब, दिल्ली, उत्तरप्रदेश में अधिक होती है। इन स्थानों पर 50 प्रतिशत तक हानि पाई गई है। इस विकृति में प्रमुख लक्षण निम्नानुसार देखे गये हैं।

● पुष्पगुच्छ से नर पुष्पों विकृत हो जाता है उसका सामान्य आकार बदल जाता है।

● पुष्प गुच्छों का समूह एक ठूठनुमा बन जाते हैं।

● ऐसे फूलों में फलन नहीं होता है।

● विकृत पुष्प गुच्छ पेड़ों पर लंबे समय तक बने रहते हैं।

● इस विकृति पर बहुत अर्से से अनुसंधान हो रहा है ताकि उसका कारण जाना जा सके एक बार कारण मालूम हो जाये तो उपचार भी सुझाये जा सकते हैं।

● कुछ कारणों में विभिन्न रखरखाव में विसंगति पोषक तत्वों का असंतुलित उपयोग, माईट फफूंद, वाईरस तथा पौधों में हार्मोन्स का असंतुलन से भी कुछ हो सकता है।

निवेदन

समस्या-समाधान स्तंभ में पाठकों से निवेदन है कि अपनी खेती-किसानी संबंधी समस्या कृषि विशेषज्ञों से निराकरण करने हेतु वाट्सएप पर भेजें. एक बार में केवल एक प्रमुख समस्या ही वाट्सएप पर लिखकर भेजें. वाट्सएप हेल्पलाइन नं. 6262166222.

समस्या-समाधान
कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.)
फोन-0755-4248100,2554864

कृषक जगत

पांच पुस्तकें एक साथ खरीदने पर डाक खर्च मुफ्त

★ बागवानी सीरीज ★

साग-सब्जी उत्पादन उन्नत तकनीक	सब्जियों में पौध संरक्षण	मशरूम एक लाभ अनेक	मिर्च की उन्नत खेती	केला उत्पादन	गुलाब बहुरंगी संशोधित संस्करण
रु. 95	रु. 75	रु. 45	रु. 55	रु. 75	रु. 75
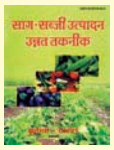	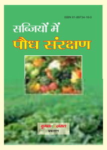				
कोड : 016	कोड : 017	कोड : 019	कोड : 020	कोड : 025	कोड : 027

पपीता	अदरक	फलों की खेती	सजाएं फूलों से बगिया	घर की बगिया
रु. 55	रु. 55	रु. 75	रु. 55	रु. 95
	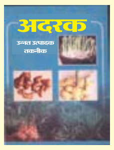			
कोड : 031	कोड : 032	कोड : 040	कोड : 041	कोड : 050

डाक द्वारा मंगवाने हेतु निम्नलिखित जानकारी के साथ हमारे पते पर ड्राफ्ट/मनीऑर्डर के साथ ऑर्डर कीजिए . किताब कोड नं. पर ✔ निशान लगाएं

016 ☐ 017 ☐ 019 ☐ 020 ☐ 025 ☐ 027 ☐ 031 ☐ 032 ☐ 034 ☐ 040 ☐ 041 ☐ 050 ☐

नाम ____

ग्राम ____ पोस्ट ____ तह. ____

जिला ____ फोन/मोबा. ____

कुल राशि ____ ऑर्डर की गई प्रतियों की संख्या ____

संलग्न ड्राफ्ट नं. ____ मनी आर्डर रसीद क्र. ____ वी.पी. भेजें ☐

संस्थाओं द्वारा अधिक संख्या में प्रतियां खरीदने पर आकर्षक छूट. अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें.

कृपया ड्राफ्ट या मनीआर्डर कृषक जगत भोपाल के नाम
14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011
फोन नं. - 0755-3013605-616, मो. : 9826255861 Email-info@krishakjagat.org
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास, इंदौर (म.प्र.) मो. : 9826021837

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

स्वास्थ्य

आपकी रसोई में मौजूद वजन घटाने के उपाय

मोटापे से परेशान लोगों के लिए सबसे बड़ी समस्या होती है वजन घटाना। इसके लिए वे महंगे जिम से लेकर खानपान पर नियंत्रण के लिए डायटीशियन तक से सलाह लेते हैं। मगर कुछ शोध बताते हैं कि वजन घटाने के काफी उपाय तो हमारे रसोईघर में ही मौजूद होते हैं। इनमें से कई तो ऐसे हैं जिनका इस्तेमाल हम रोजमर्रा के खानपान में भी करते हैं। विशेषज्ञों का दावा है कि ये सुपरफूड आपके शरीर की ऊर्जा खपत बढ़ा देते हैं, जो वजन घटाने में मददगार होती है।

लाल मिर्च – लाल मिर्च वजन घटाने में भी अहम रोल अदा करती है। इसमें मौजूद कैपसेसिन तत्व शरीर में ऊर्जा पैदा करता है, जिससे कैलोरी की खपत बढ़ जाती है। हमारे शरीर में मौजूद श्वेत वसा कोशिकाएं ऊर्जा का संग्रह करती हैं, जबकि भूरी वसा कोशिकाएं तापजनक होती हैं। यह शरीर की चर्बी को गलाकर गर्मी पैदा करती है।

सब्जियां और अनाज – ओट्स और लाल चावल में एक खास तरह का फाइबर होता है, जिसे पचाने में शरीर को अधिक ऊर्जा की खपत करनी पड़ती है। इसके अलावा सब्जियों में पालक और पत्तागोभी भी वजन घटाने में मददगार होती है।

इस डाइट के साथ सेब और नाशपाती को भी शामिल कर आप शानदार नतीजे पा सकते हैं।

काली मिर्च –हम अक्सर इसका सेवन सर्दी–जुकाम होने या फलों की चाट को जायकेदार बनाने में करते हैं। काली मिर्च में पिपरीन तत्व पाया जाता है, जो गर्मी पैदा करने वाला माना जाता है। समझा जाता है कि यही तत्व कुछ वसा कोशिकाओं को तोड़ने का काम करता है।

अदरक – अदरक में भी लाल मिर्च की तरह कैसेसिन तत्व होता है, जिसके कारण उसमें तीखापन आता है। अदरक का इस्तेमाल ताजा या पाउडर बनाकर खाने में करने से शरीर में ऊर्जा का संचार बढ़ता है, जिससे चयापचय में इजाफा होता है। कुछ शोध बताते हैं अदरक से भूख का अहसास कम होता है, जिससे वजन नियंत्रित करने में मदद मिलती है।

ग्रीन टी– ग्रीन टी वजन घटाने की कोशिशों में जुटे लोगों के लिए अचूक उपाय है। इसमें मौजूद कैफीन और कैटेचिन पॉलीफेनॉल्स एक तरह के माइक्रोन्यूट्रिएंट्स होते हैं, जो शरीर की चयापचय प्रक्रिया बढ़ाते हैं। इससे शरीर में कैलोरी की खपत बढ़ती है और वजन घटाने में मदद मिलती है।

स्वास्थ्यवर्धक औषधयुक्त पेय

ग्रीष्म ऋतु में आयुर्वेदानुसार मनुष्य का स्वाभाविक बल क्षीण होता है एवं इसका अनुभव प्रत्यक्ष रूप से महसूस भी करते हैं। ग्रीष्म ऋतु में अत्यधिक ऊष्णता एवं शरीर से अत्यधिक पसीना निकलने से शरीर में इलेक्ट्रोलाइट्स की कमी होती है। शरीर में लू (सनस्ट्रोक) लगने का भय बना रहता है।

आयुर्वेदानुसार गर्मियों में मधुर, स्निग्ध, शीतल पचने में हल्के तथा द्रव (लिक्विड) पदार्थों का सेवन करना चाहिए। दूध, मिश्री, सत्तू, शीतल जल एवं पानक (पना) पीना लाभप्रद होता है। ग्रीष्म ॠतु में ऐसे व्यक्ति जो प्रतिदिन मद्यपान करते हैं वे व्यक्ति अल्पमात्रा में मद्यपान करें या अल्पमद्य में अधिक मात्रा जल मिलाकर लें, अधिक लाभप्रद यह है कि मद्यपान बिल्कुल न करें।ग्रीष्म ऋतु में आयुर्वेदानुसार मनुष्य का स्वाभाविक बल क्षीण होता है एवं इसका अनुभव प्रत्यक्ष रूप से महसूस भी करते हैं। ग्रीष्म ऋतु में अत्यधिक ऊष्णता एवं शरीर से अत्यधिक पसीना निकलने से शरीर में इलेक्ट्रोलाइट्स की कमी होती है।

आयुर्वेद में इस तरह के पानक (पना) के निर्माण की विधियाँ दी गई हैं, जो औषध गुणों के साथ–साथ गर्मियों में होने वाली जलन, ताप एवं लू, भूख की कमी आदि को दूर करते हैं एवं शरीर की थकावट को दूर करते हैं।

आम का पना – कच्चे आम को पानी में उबालकर, समलकर गुठली निकाल लें। उसमें दुगनी शक्कर, शीतल जल तथा अल्पमात्रा में कालीमिर्च एवं जीरा मिलाकर पीने से यह तत्काल बल एवं भोजन में रुचि बढ़ाता है। इसमें आवश्यकतानुसार सेंधा नमक मिलाया जा सकता है।

नींबू का पना – नींबू का रस 1 भाग, शक्कर 4–6 भाग लेकर दोनों को पकाकर चाशनी बनने पर आवश्यकता अनुसार अल्प मात्रा में लौंग एवं कालीमिर्च का चूर्ण डालें, आवश्यकतानुसार पानी मिलाकर पीने से यह ग्रीष्म ॠतु में भोजन के प्रति रुचि उत्पन्न करता है, भोजन को पचाता है एवं गर्मी में वात बढ़ने से वात को नष्ट करता है।

पाक्षिक पंचांग

6 से 19 मई 2024 तक
विक्रम संवत् 2081
वैशाख कृष्ण 13 से वैशाख शुक्ल 11 तक

दि.	माह	वार		तिथि/त्यौहार
6	मई	सोम	वैशाख कृष्ण	13 शिव चतुर्दशी व्रत
7	मई	मंगल	----------	14 अमावस्या
8	मई	बुध	----------	30 स्ना.दा. अमावस्या
9	मई	गुरु	वैशाख शुक्ल	1
10	मई	शुक्र	----------	2/3
11	मई	शनि	----------	4 विनायकी चतुर्थी व्रत
12	मई	रवि	----------	5 मदर्स डे
13	मई	सोम	----------	6
14	मई	मंगल	----------	7 गंगा सप्तमी
15	मई	बुध	----------	7
16	मई	गुरु	----------	8 सीता नवमी
17	मई	शुक्र	----------	9
18	मई	शनि	----------	10
19	मई	रवि	----------	11 मोहिनी एकादशी

अमृत रस

● डॉ. साधना गंगराड़े
drsadhanagangrade@gmail.com

चलो, धन्यवाद के धन से धनवंत हो जायें

आपके पास रोशनी है, जल है, भोजन है तो हर किरण, हर बूंद और हर कण के प्रति शुक्रिया कहना सीखिए, छोटे–छोटे धन्यवाद के शब्द बड़े–बड़े काम कर जाते हैं, हर बार जब हम धन्यवाद देते हैं तो पृथ्वी पर स्वर्ग का एहसास करते हैं। शुक्रिया दरअसल एक ऐसी संवेदना है जो न केवल बेहतर जिंदगी के रास्ते खोलती है, बल्कि हमें कमियों में भी सुकून महसूस कराती है।

शोध में पाया गया है कि जो लोग आभार व्यक्त करना जानते हैं उन्हें जिंदगी जीने की कला आती है वे सिर्फ खुशियों में ही नहीं दुख में भी यकीन करते हैं लेकिन उन्हें भरोसा होता है कि वे अपनों की बदौलत उस मुश्किल वक्त को भी पार कर लेंगे।

शुक्रिया या धन्यवाद कहना जीवन को बेहतर बनाता है शारीरिक और मानसिक दोनों रूपों में। कृतज्ञता का अभ्यास अपनी जिंदगी में आशीर्वाद की गिनती और जीवन के बेहतर पहलुओं की परख हमें सकारात्मक ढंग से बदल सकते हैं।

माइकल क्लाक ने कृतज्ञता पर शोध किया। इस शोध में पाया कि जो लोग कृतज्ञता महसूस करते हैं उनमें प्यार और अपनेपन की संभावनाएं अधिक होती हैं। यह भी पाया गया कि कृतज्ञता ने दया के साथ–साथ अहं, ईष्या, आलस, धैर्य, क्रोध, बदला, उद्देश्य, नजरिया, प्रतिस्पर्धा, संतुष्टि, क्षमा, दया, शक को भी प्रेरित किया और उन्हें गहराईयों तक छुआ। कृतज्ञता प्रकट करके हर व्यक्ति खुश, स्वस्थ और समृद्ध रहने का स्तर बढ़ा सकता है। सकारात्मक सामाजिक प्रभाव उत्पन्न कर सकता है जो व्यक्ति अपने जीवनकाल में अधिक से अधिक कृतज्ञता प्रकट करता है, उसकी सेहत अच्छी रहती है उसे कई गंभीर रोगों से छुटकारा मिलता है।

कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान की प्रोफेसर सोनजा मानती हैं – कृतज्ञता जीवन को भरपूर बनाती है जो कुछ हमारे पास है उसे पर्याप्त या उससे भी ज्यादा में बदल सकता है। यह अस्वीकृति को स्वीकृति में, उलझनों को स्पष्टता में, अव्यवस्था को व्यवस्था में, भोजन को दावत में, मकान को घर में और अजनबी को दोस्त में बदल सकता है।

मनोवैज्ञानिक आइजक ने पाया सकारात्मक संवेदनाएं लोगों को दूसरों की मदद के लिये प्रेरित करती है। शुक्रिया अदा करना और लेना दोनों ही हमें भीतर से ऊर्जावान बनाता है। जब एक बार आप इसे अपना लेंगे तो पछतावे की बजाय आसपास में मौजूद हर एक चीज का आनंद उठाना सीख जायेंगे।

ग्रेटिट्यूड ए वे ऑफ लाइफ किताब के अनुसार अक्सर हमें जीवन में जो नहीं मिलता हम उसके प्रति आभार या कृतज्ञता प्रकट नहीं करते जबकि सही तरीका यह है जो कुछ हमारे पास है उसको हर चीज के लिए आभारी होना चाहिए। अगर आपके घर कार नहीं है तो आपका जीवन बेमानी है। जिंदगी तो उसकी भी है जो साइकिल से काम चलाता है। आपके बच्चे के परीक्षा में कम अंक आएं तो कोसने की बजाय उन बच्चों के बारे में सोचें जिन्हें शिक्षा ही नहीं मिली। हमेशा उन खूबियों को ध्यान में रखें जो ईश्वर ने हमें दी है। कृतज्ञता एक कर्तव्य है जिसे लौटाना चाहिए।

कृतज्ञता भावनाओं से, शब्दों से प्रकट करें। साथ ही ग्रीटिंग कार्ड, उपहार, बुके, पत्र द्वारा, चाकलेट, नर्सरी के पौधे देकर, गाने, गजल की सीडी देकर चाय या भोजन पर निमंत्रण देकर और सबसे आसान तरीका दिल से शुक्रिया कहें।

कुल मिलाकर धन्यवाद एक ऐसी संपत्ति है, जो बांटने से बढ़ती है और आपको संपूर्ण जीवन का अहसास कराती है। धन्यवाद प्रतिदिन बार–बार कहें यह एक ऐसा मंत्र है जिससे खुश और स्वस्थ रहा जा सकता है बदले में आपको कोई कीमत भी नहीं चुकानी है। इसलिये हर दिन शुक्रगुजार बन एक अच्छी मुस्कान के साथ शुक्रिया, धन्यवाद कहें।

वरेण्य कवि श्री शिवमंगल सिंह सुमन जी ने आभार धन्यवाद को बड़ी खूबसूरती से इन पंक्तियों में उकेरा है –

इस पथ पर वे ही चलते हैं,
जो चलने का पा गये स्वाद
जिस जिससे पथ पर स्नेह मिला
उस उस राही को धन्यवाद।

जबलपुर कृषि विश्वविद्यालय का सूक्ष्म जीव अनुसंधान केन्द्र देश में अद्वितीय

केन्द्र में 16 प्रकार के उच्च गुणवत्तायुक्त जैव उर्वरक कृषकों के लिए उपलब्ध

जबलपुर (कृषक जगत)। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर के कुलगुरू डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा की प्रेरणा से विश्वविद्यालय के मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन शास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. पी.एस.कुल्हारे के मार्गदर्शन में कृषकों हेतु विभिन्न फसलों के लिये जैव उर्वरक उत्पाद तैयार किये जा रहे हैं जो कि जैविक कृषि के प्रमुख आदान के रूप सर्वोत्तम सिद्ध हो रहे हैं। साथ ही इनकी लोकप्रियता प्रदेश में ही नहीं पूरे देश में दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। इस दौरान मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन शास्त्र विभाग के अंतर्गत संचालित सूक्ष्म जीव अनुसंधान एवं उत्पादन केन्द्र द्वारा जैविक कृषि के प्रमुख आदान जवाहर जैव उर्वरक का उत्पादन किया जाता है। विश्वविद्यालय द्वारा फसलों में उपयोग हेतु सूक्ष्म जीव अनुसंधान एवं उत्पादन केन्द्र द्वारा 16 प्रकार के उच्च गुणवत्ता के जैव उर्वरकों को केन्द्र के प्रमुख डॉ. वाय.एम.शर्मा की देखरेख में वैज्ञानिकों के कुशल नेतृत्व में तैयार किया जाता है।

गौरतलब है कि सूक्ष्म जीव अनुसंधान व उत्पादन केन्द्र द्वारा विविध फसलों हेतु उत्पादित 16 प्रकार के प्रमुख जवाहर जैव उर्वरक में जवाहर राईजोबियम, जवाहर एजोटोबेक्टर, आदि उत्पादों की श्रृंखला कृषकों हेतु कम लागत व गुणवत्तापूर्ण रूप से उपलब्ध है।

जैव उर्वरकों का सही मात्रा में फसल विशेष के उपयोग हेतु जानकारी के लिये केन्द्र के प्रमुख डॉ. वाई. एम. शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक **मो. 8989445355** एवं डॉ. राकेश साहू, वैज्ञानिक एवं डॉ. एफ.सी. अमूले, वैज्ञानिक जवाहर जैव उर्वरक केन्द्र में सम्पर्क कर जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

अनाज घरों में सुरक्षित तरीके से भण्डारण करें

टीकमगढ़ (कृषक जगत)। कृषि विज्ञान केन्द्र, टीकमगढ़ के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. बी. एस. किरार, वैज्ञानिक डॉ. आर. के. प्रजापति, डॉ. यू. एस. धाकड़, डॉ. एस. के. जाटव एवं डॉ. आई. डी. सिंह द्वारा कृषकों को फसलों की गहाई उपरान्त अनाज को घरों में सुरक्षित रखने की सलाह दी गयी। किसान अनाज को घरों में कोठी, बोरे या अन्य प्रकार से भण्डारण करते हैं। भण्डारण के दौरान अनाज में कई प्रकार के कीट जैसे- खपरा, बीटल, सुरेही (अनाज का पतंगा), चावल का घुन, दालों का डोरा एवं चूहे काफी नुकसान पहुंचाते हैं। किसान गहाई के उपरान्त अनाज को धूप में ठीक से न सुखाकर जल्द बाजी करके अनाज को घरों में भण्डारित कर देते हैं ऐसे अनाज को कीट जल्दी ग्रसित करता है।

उपचार के तरीके

किसान मेहनत से पैदा किये गये अनाज को भण्डारण गृह में होने वाले नुकसान को बचाने के लिये बोरियों, कोठियों व गोदामों की सफाई एवं दवा से उपचारित करें।

- भण्डारण गृह में तापमान व हवा का उचित प्रबंधन होना चाहिए।
- भण्डारण कक्ष का फर्श पक्का होना चाहिए।
- अनाज को धूप में जब तक सुखाये कि दांत से दबाने पर कट की आवाज आये अर्थात् दानों में 10-12 प्रतिशत नमी रह जाये।
- पक्के फर्श पर लकड़ी के तखते या बांस रखकर उन पर तिरपाल बिछाकर और करीब दीवारों से 1.5 से 2 फीट जगह छोड़ कर अनाज की बोरी रखें।
- बोरियों का ढेर 6X6 मी. से अधिक नहीं होना चाहिए अर्थात् भण्डारण गृह की ऊंचाई का एक चौथाई भाग खाली रखें।
- कीट प्रबंधन हेतु रासायनिक दवा एल्यूमिनियम फॉस्फाइड 7 गोली प्रति 1000 घन मी. प्रयोग करें।
- भण्डारण के समय अनाज में एम्पुल 3 मिली प्रति क्विंटल या 20 मिली ई.डी.बी. एम्पुल प्रति घन मीटर या नीम की निंबोली के पावडर को अनाज में मिलाकर भण्डारण करें।
- गोदामों में सबसे ज्यादा हानि चूहा पहुंचाता है इसके बचाव के लिए पिंजरा का उपयोग करें या फिर एल्यूमिनियम फॉस्फाइड दवा की गोली बनाकर चूहों के बिलों में डालकर उन्हें गीली मिट्टी से बंद कर दें।
- इस प्रकार चूहों के बिलों के अन्दर गैस बनने से चूहे नियंत्रित हो जायेंगे।

राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के तहत

स्प्रिंकलर सिंचाई से मूंग उत्पादन अधिक होने की उम्मीद

उपसंचालक ने किया खेतों का अवलोकन

छिंदवाड़ा (कृषक जगत)। मध्यप्रदेश में ग्रीष्मकालीन फसलों में प्रथम स्थान हासिल मूंग फसल के प्रति कृषकों का रुझान बढ़ा है। जिले में कृषि विभाग द्वारा सिंचाई की उपलब्धता पर चयनित कृषकों को राष्ट्रीय खाद्य एवं पोषण सुरक्षा मिशन के तहत मूंग बीजों का वितरण किया। बीजों को मार्च मध्य में किसानों ने खेतों में लगाया।

मूंग क्लस्टर प्रदर्शन के तहत फसल का जायजा लेने उप संचालक कृषि श्री जितेंद्र कुमार सिंह मोहखेड़ विकासखण्ड के ग्राम लिंगा में कृषक श्री सीताराम आपाजी राउत के खेत में पहुंचे यहां कृषक द्वारा नवाचार के रूप में मूंग की फसल लगाई गई एवं मिनी स्प्रिंकलर से फसल की सिंचाई की जा रही है। स्प्रिंकलर सिंचाई विधि से फसल की स्थिति बहुत अच्छी है एवं उत्पादन भी अधिक होने की संभावना है।

उप संचालक कृषि श्री सिंह ने मूंग फसल उत्पादित कृषकों से चर्चा की एवं फसल की अन्य तकनीकी बताई। भ्रमण के दौरान सहायक संचालक कृषि श्री दीपक चौरसिया, वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी श्री डी. एस. घाघरे, राष्ट्रीय खाद्य एवं पोषण सुरक्षा मिशन के श्री चेतनानंद कांवले, तकनीकी सहायक श्री अश्विनी गुप्ता, श्रीमती मधुवेन, श्रीमती प्रिया कराडे, श्री पंकज पराड़कर, श्री दिनेश धुर्वे, श्रीमती सेवंती चौकसे सहित क्षेत्र के कृषक उपस्थित थे।

78 वर्ष
कृषक जगत
राष्ट्रीय कृषि अखबार
भोपाल-जयपुर-रायपुर

वर्ष में कई आकर्षक एवं संग्रहणीय विशेषांक
- खरीफ विशेषांक
- पौध संरक्षण विशेषांक
- रबी विशेषांक
- बीज विशेषांक
- बागवानी विशेषांक

25 लाख पाठक

कृषक जगत की सदस्यता राशि
➩ वार्षिक रु. 600/- ➩ दो वर्ष रु. 1000/-
➩ तीन वर्ष रु. 1500/-

डाक से नियमित रूप से **'कृषक जगत'** – प्रति सप्ताह ☐ भोपाल ☐ जयपुर ☐ रायपुर संस्करण निम्न पते पर एक वर्ष/दो वर्ष / तीन वर्ष भेजें. (अपनी आवश्यकता के अनुरूप निशान लगायें).

नाम ....
....
ग्राम ....पो. ....
डाक वितरण हेतु अपने क्षेत्रीय पोस्टमैन का मो. नं. अवश्य दें : ....
वि.ख. .... तह. ....
जिला .... पिन ☐☐☐☐☐☐ राज्य ....
शिक्षा .... भूमि .... उम्र ....
ट्रैक्टर/मॉडल .... फोन/मो. ....
ई-मेल ....
मेरा सदस्यता शुल्क रुपये .... नगद/डिमांड ड्राफ्ट/UPI/Bank/
मनीऑर्डर/क्र. .... 'कृषक जगत' भोपाल के नाम संलग्न है।

कृषक जगत में सदस्यता लेने के माध्यम
कृषक जगत ऑनलाइन पेमेंट लिंक
http://www.krishakjagat.org/krishak-jagat-subscription/index.php
Online Payment- SBI-A/C No. 53007193070, IFSC : SBIN 0005793, Google Pay/Phone Pe/PAYTM/UPI : Mobile 9826255861
कृषक जगत हेल्पलाइन नम्बर 6262166222

पेमेंट के बाद : 1. पेमेंट का स्क्रीनशॉट भेजें इस फोन नम्बर पर 9826255861
2. पूरा नाम, पता पिन कोड के साथ भेजें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
प्रसार प्रबंधक कृषक जगत

भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011 फोन: 0755-4248100, मो. : 9926653355, 9826255861, E-mail-info@krishakjagat.org
जयपुर : एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.), मो. : 9829254092, 7387422952
रायपुर : एलआईजी-5, सेक्टर-2, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.), मो.: 9826255862
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर, मो. : 9826021837, 9826024864
नई दिल्ली : 403, आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली, मो. : 7387422952

ग्वालियर में स्लॉट बुक कराए बगैर गेहूं की खरीदी

बरई उपार्जन केन्द्र में की गई कार्रवाई में 683 बैग गेहूं जब्त

ग्वालियर (कृषक जगत)। उपार्जन केन्द्र पर स्लॉट बुक कराए बगैर गेहूं की खरीदी करना बरई प्राथमिक सहकारी साख समिति के खरीदी प्रभारी को भारी पड़ा है। जिला प्रशासन को मिली शिकायत के आधार पर बरई के उपार्जन केन्द्र पर संयुक्त टीम ने छापामार कार्रवाई कर 683 बैग गेहूं जब्त कर लिया है। साथ ही खरीदी प्रभारी के खिलाफ उपार्जन नीति के प्रावधानों के तहत कार्रवाई की जा रही है। कार्रवाई करने गई संयुक्त टीम में जिला आपूर्ति नियंत्रक श्री भीम सिंह तोमर, जिला प्रबंधक नागरिक आपूर्ति निगम श्री सोनू गर्ग, कनिष्ठ आपूर्ति अधिकारी श्री अरविंद सिंह भदौरिया एवं प्राथमिक सहकारी साख समिति के प्रबंधक श्री गर्ग सहित अन्य संबंधित अधिकारी शामिल थे।

अपर कलेक्टर श्रीमती अंजू अरुण कुमार को सूचना मिली थी कि बरई में समर्थन मूल्य पर गेहूं उपार्जन के लिए स्थापित केंद्र पर स्लॉट बुक कराए बगैर गेहूं की खरीदी की जा रही है। इस सूचना पर खाद्य विभाग, नागरिक आपूर्ति निगम एवं सहकारिता विभाग के अधिकारियों की संयुक्त टीम मौके पर भेजकर जांच कराई गई। जांच के दौरान यह शिकायत सही पाई गई कि बरई उपार्जन केन्द्र के प्रभारी द्वारा किसानों से स्लॉट बुक नहीं कराए हैं और प्रावधानों के विपरीत गेहूं का उपार्जन किया गया है। मौके पर गेहूं के 683 बैग जब्त किए गए। इन बैगों में 341.5 क्विंटल गेहूं है। खाद्य विभाग द्वारा जिले के सभी खरीदी केन्द्रों के प्रभारियों सहित अन्य संबंधित अधिकारियों को साफ तौर पर ताकीद किया गया है कि वे उपार्जन नीति के प्रावधानों का पालन कर समर्थन मूल्य पर गेहूं की खरीदी करें। इसमें जरा सी भी अनियमितता पाए जाने पर सख्त कार्रवाई की जायेगी।

समर्थन मूल्य पर चना, मसूर, राई, सरसों की खरीदी 31 मई तक

मंडला (कृषक जगत)। शासन द्वारा विपणन वर्ष 2024-25 की उपज चना, मसूर, राई, सरसों की समर्थन मूल्य पर खरीदी 31 मई 2024 तक की जाएगी। भारत सरकार द्वारा औसत अच्छी गुणवत्ता (एफएक्यू) के चना, मसूर, राई, सरसों को समर्थन मूल्य क्रमश: 5440 प्रति क्विंटल, 6425 प्रति क्विंटल तथा 5650 प्रति क्विंटल घोषित किया गया है।

मंडला जिले में उपार्जन हेतु 3 उपार्जन केन्द्रों का निर्धारण किया गया है, जिसमें बहुउद्देशीय प्राथमिक साख सहकारी समिति मंडला उपार्जन स्थल एसडब्ल्यूसी 1245 गोदाम सुभाष वार्ड मंडला, विपणन सहकारी समिति बिछिया, उपार्जन स्थल एमपीडब्ल्यूएलसी न. 1 गोदाम भुआ बिछिया, विपणन सहकारी समिति नैनपुर उपार्जन स्थल एमपीडब्ल्यूएलसी न. 1 गोदाम नैनपुर शामिल है।

उपज विक्रय हेतु एसएमएस प्राप्त होने का इंतजार करने की आवश्यकता को समाप्त करते हुए कृषक स्वयं उपार्जन केन्द्र एवं उपार्जन दिनांक स्लॉट बुकिंग के माध्यम से कर सकेंगे।

ई-उपार्जन पोर्टल पर पंजीकृत, सत्यापित कृषक द्वारा स्वयं के मोबाईल, एम.पी. ऑनलाईन, सी.एस.सी., ग्राम पंचायत, लोकसेवा केंद्र, इन्टरनेट कैफे, उपार्जन केन्द्र से स्लॉट बुकिंग की जा सकेगी।

एस.एस.आर. बनाने पर कार्यशाला

ग्वालियर। कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर में शिक्षा को सशक्त बनाने व यूजीसी द्वारा नैक ग्रेड अर्जित करने हेतु आयोजित तकनीकी प्रशिक्षण में तकनीकी विशेषज्ञ प्रो. एस.के. गुप्ता द्वारा एस.एस.आर. बनाने हेतु बारीकियों की विस्तारपूर्वक जानकारी प्रदान की गई।

कार्यशाला में कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अरविन्द कुमार शुक्ला ने कहा कि हम सभी को इस प्रशिक्षण से लाभ लेकर नैक द्वारा ग्रेड अर्जित करने हेतु कठोर परिश्रम करना चाहिए।

कार्यक्रम में अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉ. मृदुला बिल्लौरे, निदेशक विस्तार सेवायें डॉ. वाय. पी. सिंह, निदेशक अनुसंधान सेवायें व निदेशक शिक्षण डॉ. संजय शर्मा, कुलसचिव श्री अनिल सक्सेना, शैक्षणिक उपकुलसचिव डॉ. एन. एस भदौरिया, कार्यपालन यंत्री डॉ. एच.एस भदौरिया, विश्वविद्यालय अंतर्गत पांचों महाविद्यालयों के अधिष्ठाता एवं प्राध्यापकगण, कृषि विज्ञान केन्द्रों से वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों ने अपनी सहभागिता दी। डाटा सेंटर में प्राध्यापकों एवं कर्मचारियों हेतु प्रो. गुप्ता द्वारा फाइलों एवं जानकारियों को जोड़ना आदि गतिविधियों का प्रस्तुतिकरण किया गया।

अधिकृत विक्रेता : कृषि दर्शन एंड कंपनी
30, साजन नगर, नेमावर रोड, इंदौर, मो. : 9827039888

बीज उपलब्ध
सोयाबीन की उन्नत किस्म के बीज उपलब्ध हैं-
जेएस-2218,
जेएस-2216, जेएस-2172,
आरवीएसएम-1135
सम्पर्क : अभिषेक जाट
मो. : 8827532021
ग्राम-सलकनपुर
जिला-धार (म.प्र.)

पटवारी एग्रो एजेंसी
:: वितरक ::
कलश सीड्स लि. ◆ बायोस्टेट इंडिया लि. ◆ बॉयर क्रॉप साइंस ◆ धानुका एग्रीटेक लि.
◆ एफ.एम.सी. इंडिया प्रा.लि. ◆ घरड़ा केमिकल्स लि. ◆ अतुल एग्रीटेक लि.
◆ रामा फॉस्फेट्स लि. ◆ जी.एन.एफ.सी. ◆ इंसेक्टीसाइड्स इंडिया लि. ◆ बीएएसएफ
◆ ड्यूपॉन्ट इंडिया लि. ◆ क्रिस्टल क्राप साइंस ◆ डाउएग्रो साइंसेस ◆ एग्री सर्च इंडिया
◆ मंशा इंडिया लि. ◆ स्वाल कार्पोरेशन लि. ◆ मेघमनी आर्गेनिक्स ◆ अदामा इंडिया लि.
17, विशाल टॉवर, इंदिरा काम्पलेक्स, नवलखा चौराहा, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 2403694, 2400412, मो. : 9425077083

मध्यभारत की सबसे बड़ी नर्सरी
तिरुपति ग्रीन हाउस नर्सरी
देश का सबसे बड़ा पौध भंडार औषधीय, फलदार, सजावटी फूलों के पौधे, इनडोर, टिश्यूकल्चर, क्रीपर, बोन्साई, सक्यूलेन्ट्स, केक्टस, हैंगिंग प्लांट, वर्टीकल प्लांट, लकी बैंबू रंज, फॉरेस्ट्री प्लांट एवं सब्जियों के पौधों की विस्तृत श्रृंखला में
: आपका स्वागत है :
सिरलाय (बड़वाह) मध्यप्रदेश
www. tirupatinursery.com
email : tirupatinursery@gmail.com
मो. : 9479457720/99/63/86/96/16/17/13/31/51
मार्च 2025

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

व्यक्तिगत क्लासीफाइड
विज्ञापन के लिए निर्धारित कैटेगरीज-
- बेचना/खरीदना- ट्रैक्टर, ट्राली, थ्रेशर, खेत, मकान, मोटरसाइकल, पशु, मोटर, जनरेटर आदि ▪ बीज ▪ औषधीय फसल

विज्ञापन दर - मात्र रु. 600/- प्रति संस्करण लगातार 4 सप्ताह तक ▪ अधिकतम 25 शब्द
- अतिरिक्त शब्द- 2 रु. प्रति शब्द, अधिकतम 40 शब्दों तक

डिस्प्ले क्लासीफाइड
विज्ञापन दर : रु. 800/- प्रति अंक, प्रति संस्करण जीएसटी 5% अतिरिक्त
साइज : फिक्स साइज- 8 × 5 = 40 वर्ग से.मी.
कैटेगरीज- बीज, कीटनाशक, जैविक खाद, ट्रेवल्स, तीर्थ यात्राएं, आवश्यकता, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, कृषि सेवा केन्द्र, शिक्षण संस्थाएं, प्रशिक्षण, बारदाने, कोल्ड स्टोरेज, गोदाम, होस्टल, वित्तीय संस्थाएं, चिकित्सक, एग्री क्लीनिक आदि।

भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त नर्सरी
ISO 9001 : 2015 सर्टिफाईड
किसान हाईटेक ग्रीनहाउस नर्सरी
द्वारा पपीता, मिर्च, टमाटर, बैंगन, तरबूज, करेला, पत्तागोभी, फूलगोभी आदि सब्जी के पौधे टेबल स्टेण्ड के ऊपर रखकर तैयार किए जाते हैं
सम्पर्क : 9407361901, 9407361902, 9407361903
सहयोगी प्रतिष्ठान : बागवानी बाजार नर्सरी
जहां पर फलदार, सजावटी व फारेस्ट्री पौधों की विस्तृत श्रृंखला उपलब्ध है।
संपर्क : मो. : 9407853117, 9407853118, 9407853119
नर्सरी स्थल : ग्राम-सिरलाय, तह.- बड़वाह 451115, जिला-खरगोन (म.प्र.)
मार्च 25

कैरा टेक्नोप्लास्ट प्रा.लि., खरगोन
आपकी समृद्धि
हमारी प्राथमिकता
हमारे यहां पर ड्रिप में फ्लैट और राउण्ड एचडीपीई व स्प्रिंकलर पाईप, एचडीपीई क्वाइल, लपेटा पाईप एवं रेन पाईप वर्जिन एवं उच्च क्वालिटी में बनाये जाते हैं।
सम्पर्क - निरंजन नगर, कसरावद रोड, खरगोन,
मो. : 7880017028, 7880017021
मई 25

बीज वितरक
गोगांवा फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी
जिला-खरगोन (म.प्र.) 451335
उन्नत गेहूं एवं चना बीज के उत्पादक एवं वितरक
सम्पर्क - 997771190
7000362599, 9826206837
जून 24

TerraGlebe Farmers Producer Company Limited
यूरोप में मिर्च निर्यात (एक्सपोर्ट) करने वाला मध्यप्रदेश का पहला किसान उत्पादक संगठन (FPO)
"एक जिला - एक उत्पाद" के अन्तर्गत IPM मिर्च उत्पादक संगठन
आपका हार्दिक अभिनंदन करता है
Mob.: 9575524408, 9926610831
Email: terraglede@gmail.com
Web.: www.terraglebe.com
July 24

मल्टीप्लेक्स®
मल्टीप्लेक्स किसान खुशहाल किसान
मल्टीप्लेक्स की जैविक खाद अपनाएं और बंजर होती जमीन को बचाएं
कर्नाटका एग्रो केमिकल्स, बैंगलोर
multiplex@multiplexgroup.com
www.multiplexgroup.com
सन 1974 से किसानो की पहली पसंद
July 24

VARDAAN® स्प्रे पम्प एवं एसेसरीज़

63, पोलोग्राउण्ड, इन्दौर-452015 (म.प्र.)
फोन: 0731-4970600, मो.: 7772000444.
वरदान एग्री सॉल्यूशन्स प्रा.लि.

कृषक जगत
की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए हेल्पलाइन नं.
62 62 166 222
www.krishakjagat.org @krishakjagatindia
@krishakjagat @krishak_jagat

टिकाऊ विकास के लिए प्रतिबद्ध

आईआईएल की सस्टेनेबिलिटी रिपोर्ट ईएसजी मानक और रणनीतिक पहल पर केन्द्रित

नई दिल्ली (कृषक जगत)। देश के फसल संरक्षण और पोषण उद्योग की अग्रणी कंपनी, इंसेक्टिसाइड्स (इंडिया) लि. (आईआईएल) ने अपनी स्थिरता (ईएसजी) रिपोर्ट FY23 जारी की है। 'एक्सेलरेटिंग इनोवेशन टू फोस्टर ए रेजिलिएंट टुमॉरो' शीर्षक वाली व्यापक रिपोर्ट पर्यावरण, सामाजिक और शासन (ईएसजी) पहलुओं के प्रति आईआईएल की प्रतिबद्धता पर प्रकाश डालती है जो कंपनी के लिए सबसे महत्वपूर्ण है।

सस्टेनेबिलिटी रिपोर्ट आईआईएल की वार्षिक रिपोर्ट के अलावा, एक स्थायी भविष्य की दिशा में आईआईएल की निरंतर यात्रा को दर्शाती है। अर्न्स्ट एंड यंग के सहयोग से वित्तीय वर्ष 2023 के लिए जारी यह रिपोर्ट ग्लोबल रिपोर्टिंग इनिशिएटिव (GRI) मानकों का पालन करने वाली गैर-वित्तीय जानकारी, गतिविधियों और सस्टेनेबिलिटी पहल का खुलासा करती है।

आईआईएल के प्रबंध निदेशक श्री राजेश अग्रवाल ने कहा, 'हमारी ईएसजी यात्रा उद्योग के सामने आने वाली चुनौतियों के बारे में हमारी अवधारणा को दर्शाती है। हमारी प्रतिबद्धता उच्च गुणवत्ता वाले, टिकाऊ उत्पादों को विकसित करने, प्रक्रिया में सुधार लाने में है।'

श्री संदीप अग्रवाल, सीएफओ बताते हैं 'कंपनी की कुछ प्रमुख पहलें इस प्रकार हैं- पर्यावरण के लिए 30 प्रतिशत हरित पट्टी; 590.29 मीट्रिक टन और 21.44 किलोलीटर खतरनाक कचरे का निपटान किया गया; 3 संयंत्रों में शून्य तरल निर्वहन, 1,473.31 मेगावाट का सोलर प्लांट लगाया गया जो कुल बिजली खपत में 9 प्रतिशत योगदान देता हैं; और रु. 271.91 लाख सीएसआर पर भी खर्च किया गया।'

टेक्नोलॉजी का उपयोग : डिजिटल परिवर्तन को अपनाने में, आईआईएल ने अपने दहेज संयंत्र में प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित किया है, मैनुअल पेपर-आधारित रिपोर्टिंग को ऑनलाइन सिस्टम से बदल दिया है।

किसान जागरूकता अभियान : किसानों को प्रमुख हितधारकों के रूप में पहचानते हुए, आईआईएल जागरूकता अभियान और प्रशिक्षण कार्यशालाओं से भी जुड़ी है। सीएसआर विंग- आईआईएल फाउंडेशन- किसान जागरूकता बढ़ाने के लिए विभिन्न एनजीओ के साथ सक्रिय रूप से साझेदारी करता है। वित्तीय वर्ष 2023 में, आईआईएल ने सीएसआर पहल के लिए 271.71 लाख रुपये समर्पित किए।

ईगल सीड्स के संस्थापक का जन्मदिन संकल्प दिवस के रूप में मनाया

इंदौर (कृषक जगत)। देश की प्रसिद्ध बीज कम्पनी ईगल सीड्स एंड बायोटेक लि. के संस्थापक स्व. श्री राजेंद्र कुमार जैन के जन्मदिन (1 मई) पर कम्पनी द्वारा कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें स्व. श्री राजेंद्र कुमार जैन के पुत्र एवं कंपनी के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री वैभव जैन ने अपनी मां और कंपनी की डायरेक्टर श्रीमती सुमंगला जैन, कंपनी अधिकारियों एवं कृषि व्यवसायियों की उपस्थिति में स्व. जैन के व्यावसायिक संघर्ष और सफलता का स्मरण किया गया।

श्री जैन ने अपने स्वर्गीय पिताजी के व्यावसायिक जीवन के संघर्ष का उल्लेख करते हुए कहा कि उन्होंने 1984 में व्यवसाय आरम्भ किया था। दो राज्यों में छोटे से ऑफिस से शुरू किए गए व्यवसाय का नेटवर्क अब 13 राज्यों तक फैल गया है। 7 से अधिक स्थानों पर आर एंड डी फार्म पर ट्रायल चल रहे हैं, जिनमें 10 फील्ड क्रॉप और 4-5 ग्रीन वेजिटेबल के शामिल हैं। गत वर्ष कम्पनी को जनवरी 2023 में परीक्षण और अंशांकन प्रयोगशालाओं के लिए राष्ट्रीय प्रत्यायन बोर्ड (एनएबीटीसी एल) द्वारा प्रमाण पत्र भी प्रदान किया गया है। पिताजी द्वारा बोया गया बीज आज वट वृक्ष बन गया है, जिसमें सभी का सहयोग मिला है। सभी का आभार। इस वर्ष के संकल्प सप्ताह में उनके विचारों को और आगे बढ़ाया जाएगा।

उल्लेखनीय है कि ईगल सीड्स द्वारा पिछले साल अपने संस्थापक के जन्मदिन पर प्रति वर्ष संकल्प सप्ताह मनाने का निर्णय लिया गया था। मई के प्रथम सप्ताह को पूरे देश में किसानों, बीज व्यापारियों, कंपनी के सभी विभागों एवं अनुसंधान केंद्र में संकल्प सप्ताह के रूप में मनाने और किसानों की विभिन्न परिचर्चाएं आयोजित करने का निर्णय लिया गया था।

महिंद्रा ने अप्रैल में भारत में 35805 ट्रैक्टर बेचे

मुंबई (कृषक जगत)। महिंद्रा ट्रैक्टर ने अप्रैल 2024 में ट्रैक्टर बिक्री संख्या की घोषणा की। जिसके अनुसार घरेलू बिक्री 35805 यूनिट रही, जबकि अप्रैल 2023 के दौरान यह 35398 यूनिट थी। अप्रैल 2024 के दौरान कुल ट्रैक्टर बिक्री (घरेलू+ निर्यात) 37039 इकाई रही, जबकि पिछले वर्ष की समान अवधि में यह 36405 इकाई थी। इस महीने निर्यात 1234 इकाई रहा। इस प्रदर्शन पर टिप्पणी करते हुए, **महिंद्रा एंड महिंद्रा लि. के कृषि उपकरण क्षेत्र के अध्यक्ष, श्री हेमंत सिक्का** ने कहा, हमने अप्रैल 2024 के दौरान घरेलू बाजार में 35805 ट्रैक्टर बेचे हैं, जो पिछले वर्ष की तुलना में 1 प्रतिशत की वृद्धि है। मंडी में अच्छी आवक के साथ सरकार का गेहूं खरीद कार्य पूरे जोरों पर चल रहा है, जिससे ग्रामीण नकदी प्रवाह स्वस्थ बना हुआ है। रबी की फसल से अच्छे नकदी प्रवाह से आने वाले महीनों में ट्रैक्टर की मांग बढ़ने की संभावना है।

कृषि में भविष्य में बेहतर संभावनाएं

विद्यार्थी कृषि क्षेत्र में आगे आएं : श्री जैन

जलगांव (कृषक जगत)। कृषि में भविष्य है, आप जैसे छात्रों में स्कूली जीवन में कृषि के प्रति प्रेम पैदा करने के लिए, छात्रों को इस क्षेत्र में प्रवेश के लिए प्रोत्साहित करने के लिए, पिछले दस वर्षों से जैन हिल्स में फली का सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। फली (फ्यूचर एग्रीकल्चर लीडर्स ऑफ़ इंडिया- Future Agriculture Leaders of India) के दूसरे चरण के विजेताओं के पुरस्कार वितरण समारोह में जैन इरिगेशन के अध्यक्ष श्री अशोक जैन ने विद्यार्थियों से, इससे प्रेरणा लेकर कृषि क्षेत्र में अपना भविष्य बनाने की अपील की। कार्यक्रम में व्यवसाय योजना प्रस्तुति, शैवाल प्रदूषण बाधा के इनोवेटिव इनोवेशन प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

फली सम्मेलन के द्वितीय चरण का पुरस्कार वितरण समारोह संपन्न

इस अवसर पर फली की उपाध्यक्ष नैंसी बैरी, जैन इरिगेशन के निदेशक डॉ. एच.पी. सिंह, जैन फार्म फ्रेश फूड्स लि. के निदेशक अथांग जैन, यूपीएल के योगेश धांडे, गणेश निकम, स्टार एग्री के सूरज पानपट्टे, निकिता शेलके, नीलम मोतियानी आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम में एक छात्र द्वारा जैन इरीगेशन कंपनी की स्थापना के संबंध में पूछे गए सवाल का जवाब देते हुए श्री अशोक जैन ने कहा, 'आपको ऐसा काम करना चाहिए कि आप पांच या सात लोगों को ही नहीं, बल्कि हजारों लोगों को खाना खिला सकें।'

जैन फार्म फ्रेश फूड्स लि. के निदेशक श्री अथांग जैन ने फली की भविष्य की रूपरेखा पर चर्चा की। इस अवसर पर जैन इरिगेशन के अध्यक्ष श्री अशोक जैन ने महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और गुजरात राज्यों के कंपनी के छात्रों के साथ प्रश्नोत्तरी सत्र भी किया। फली की उपाध्यक्ष नैन्सी बैरी ने भी दर्शकों से बात की। कार्यक्रम का संचालन श्री हर्ष नौटियाल ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन रोहिणी घाडगे ने किया।

मल्टीप्लेक्स का विक्रेता सम्मेलन सम्पन्न

इंदौर (कृषक जगत)। मल्टीप्लेक्स ग्रुप ऑफ कम्पनीज द्वारा गत दिनों इंदौर में विक्रेता सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें कम्पनी के एमडी श्री महेश शेट्टी, चीफ मार्केटिंग मैनेजर श्री नागेंद्र शुक्ला, स्टेट मैनेजर श्री सुनील पांडे एवं कम्पनी के अन्य अधिकारियों सहित बड़ी संख्या में डीलर/ विक्रेता उपस्थित थे। इस अवसर पर कम्पनी द्वारा विभिन्न श्रेणियों में सर्वाधिक बिक्री करने वाले विक्रेताओं को सम्मानित भी किया गया।

श्री शेट्टी ने विकसित भारत के लिए नए जमाने के उर्वरकों को प्रोत्साहित करने पर जोर देते हुए कहा कि इससे सरकारी सब्सिडी बचेगी, जो इम्पोर्ट के कारण विदेशों में जा रही है।

ड्रोन छिड़काव से रसायन की बचत

श्री शेट्टी ने कहा कि ई ड्रोन से छिड़काव करने पर 30 प्रतिशत रसायन की बचत होती है और पानी भी कम लगता है। इससे फसल पर समान छिड़काव होता है और पर्यावरण संरक्षण में भी मदद मिलती है। उत्तर प्रदेश में 15 हजार एकड़ में ड्रोन से किए गए छिड़काव के अच्छे नतीजे मिले हैं। नए उत्पादों पर एमडी ने कहा कि कम्पनी द्वारा ट्रैक्टर निर्माण अभी प्रक्रिया में है, जबकि ड्रोन दीदियों एवं बड़े उर्वरक डीलरों के लिए ऑटोमेटिक ट्रॉली व्हीकल और बहुउद्देशीय जेसीबी मशीन भी लाए हैं, जो बहुत मददगार साबित होगी।

कम्पनी के नए उत्पाद

आपने कम्पनी के नए उत्पाद प्रणाम सीए पर भी प्रकाश डाला, जो कैल्शियम नाइट्रेट का विकल्प है और जो पूर्ण रूप से जैविक पदार्थ से बना खाद है। आपने किसानों के हित में कम लागत वाली खेती को प्रोत्साहित करने का आह्वान किया।

श्री शुक्ला ने ग्रीन फर्टिलाइजर की जानकारी देते हुए बताया कि रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग से जहाँ ज़मीन कठोर हो रही है, वहीं खेती की लागत भी बढ़ रही है। ज़हरीले रसायनों से जमीन के अलावा मानव का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो रहा है। ऐसे में ग्रीन फर्टिलाइजर को अपनाना समय की जरूरत है। यह रासायनिक खादों का बेहतर विकल्प भी है। इसके पूर्व श्री विजय चौधरी ने दृश्य-श्रव्य माध्यम से कम्पनी एवं उत्पादों की विस्तार से जानकारी दी। इस सम्मेलन में कम्पनी द्वारा विभिन्न श्रेणियों में सर्वाधिक बिक्री करने वाले विक्रेताओं को सम्मानित भी किया गया। आरम्भ में अतिथियों का स्वागत श्री ओमप्रकाश बारपेटे ने किया। आभार श्री सुनील पांडे ने माना।

GOODYEAR FARM TIRES SINCE 1898
गुडईयर फार्म टायर के सौजन्य से

मौसम गड़बड़ा सकता है - सारे आर्थिक अनुमान

● राकेश दुबे, मो. : 9425022703

बड़ी अजीब कश्मकश है, प्रतिकूल मौसमी हालात तथा बदलते भू-राजनीतिक समीकरणों ने चिंता को और गहरा दिया है। निर्धारित चार प्रतिशत तक मुद्रास्फीति नियंत्रण के लक्ष्य को लेकर अनिश्चितता का माहौल है। बीते माह में खुदरा मुद्रास्फीति की दर 4.9 प्रतिशत थी इस पर केंद्रीय बैंक समेत आर्थिक विशेषज्ञ उत्साहित थे कि अब चार फीसदी के लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है। इसी मकसद से केंद्रीय बैंक ने अप्रैल 2023 के बाद से रेपो दरों में किसी तरह का बदलाव नहीं किया।

केंद्रीय बैंक को आशंका थी कि रेपो दरों में बदलाव से महंगाई बढ़ सकती है। ऐसे में आरबीआई मुद्रा स्फीति की मौजूदा स्थिति को लेकर आशावान है। लेकिन साथ ही चिंतित है कि मौसम के मिजाज में लगातार आ रहे बदलाव तथा दो साल से जारी रूस-यूक्रेन युद्ध व हालिया गाजा संकट से वैश्विक स्तर पर महंगाई बढ़ सकती है। जिसका असर भारत पर पड़ना लाजिमी है। इन्हीं आशंकाओं के चलते केंद्रीय बैंक ने अपनी मौद्रिक नीति को नहीं बदला है।

भारतीय अर्थव्यवस्था पर पैनी निगाह रखने वाली सीएमआईई की रिपोर्ट में विश्वास जताया गया है कि इस वित्तीय वर्ष के अंत तक खुदरा मुद्रास्फीति पांच साल के न्यूनतम स्तर तक पहुंच सकती है। मौसमी अस्थिरता इस मार्ग में बाधक बन सकती है। दरअसल, वैश्विक मौसम संगठन के संकेत हैं कि विपरीत मौसमी स्थितियां हमारी कृषि अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर सकती हैं। जिसका सीधा असर खाद्यान्न महंगाई पर पड़ सकता है। हालांकि, भारत की सकल घरेलू उत्पाद दर के फिलहाल सात प्रतिशत रहने के अनुमान तमाम देशी-विदेशी आर्थिक संगठन लगा रहे हैं, लेकिन अचानक पैदा हुई प्रतिकूल परिस्थितियों के बाबत भविष्यवाणी करना आसान नहीं है। इसके बावजूद जरूरी है कि महंगाई पर नियंत्रण के प्रयासों के प्रति हम गंभीर रहें। दुनिया की सबसे बड़ी हमारी युवा आबादी जिसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

हमें यह स्वीकार करना होगा कि जलवायु परिवर्तन का असर पूरी दुनिया को गहरे तक प्रभावित करने लगा है। खासकर कृषि क्षेत्र के प्रभावित होने से महंगाई बढ़ने का खतरा लगातार बना हुआ है। अतिवृष्टि-अनावृष्टि और अचानक आने वाली बाढ़ दुनिया की अर्थव्यवस्थाओं को बुरी तरह प्रभावित कर रही हैं। जिससे सारी दुनिया में खाद्यान्नों की कीमतों में तेजी आ रही है।

पिछले दिनों भारत में यह भी देखा कि जब गेहूं की फसल तैयार होकर खलिहानों तथा मंडियों तक पहुंचने लगी तो पश्चिमी विक्षोभ के चलते हुई बारिश ने काफी नुकसान किया। निश्चित रूप से गोदाम पहुंचने से पहले अनाज का भीग जाना किसान के लिये संकट का सबब बन जाता है। यह घटनाक्रम अब हर साल का क़िस्सा बन गया है।

हजारों टन अनाज बेमौसमी बारिश की भेंट चढ़ जाता है। जिससे अनाजों, फलों व सब्जियों की फसल खराब होने से खाने-पीने की वस्तुओं के दाम बढ़ जाते हैं। पर्याप्त भंडारण की व्यवस्था न होने के कारण बिचौलिये जमाखोरी के जरिये वस्तुओं के दामों में कृत्रिम उछाल पैदा कर देते हैं। जो कालांतर खुदरा मुद्रास्फीति बढ़ने का कारण बन जाता है। जिसका सीधा असर आम आदमी की थाली पर पड़ता है।

रूस-यूक्रेन युद्ध, हालिया गाजा संकट एवं समुद्री जहाजों पर हूती विद्रोहियों के हमलों ने भी कच्चे तेल के दामों में तेजी पैदा की है। इस तरह पेट्रोलियम पदार्थों के दामों में उछाल से ढुलाई का खर्च बढ़ जाता है। जो कालांतर महंगाई की एक वजह भी बनता है।

भारत जैसे देश के लिये विशेष रूप से जहां कच्चे तेल का अधिकांश हिस्सा विदेश से आयात होता है। कुल मिलाकर युद्ध व भू-राजनीतिक तनाव भी महंगाई बढ़ने का एक बड़ा कारण बनता जा रहा है। इसी चिंता के चलते ही केंद्रीय बैंक को कहना पड़ा कि हम खुदरा मुद्रास्फीति को नियंत्रित तो कर सकते हैं बशर्ते अन्य बातें सामान्य रहें। यानी मौसमी उतार-चढ़ाव व वैश्विक अस्थिरता का असर हम पर कम हो। हालांकि, मौसम विभाग इस बार सामान्य मानसून की भविष्यवाणी कर रहा है, इसके बावजूद सिंचाई के वैकल्पिक साधनों को बढ़ाते रहना होगा।

उर्वरक आदेश 1985 में संशोधन,नैनो जिंक और नैनो कॉपर शामिल

इंदौर (कृषक जगत)। केंद्रीय कृषि मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा आवश्यक वस्तु अधिनियम 1955 की धारा 10/3 के तहत, उर्वरक (अकार्बनिक,कार्बनिक या मिश्रित) (नियंत्रण) (दूसरा) आदेश 1985 में और संशोधन करने के लिए आदेश (क्रमांक 1694 दिनांक 24 अप्रैल 2024) जारी किया है जो भारत के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से लागू होगा।

उक्त आदेश में सल्फर 90 (डिसपेरसिबल कण),एन:पी:के:एसआई:सीए:एमजी 1.4-4-5-5-2-1.5, एन:पी:के:एसआई:सीए:बी 2.5-1.0-10-5-1.5-2,जिंक के साथ सल्फर (कण), यूरिया अमोनियम सल्फेट (तरल), पोटेशियम नाइट्रेट आयोडीन के साथ में भार के आधार पर मिश्रित तत्वों का न्यूनतम/अधिकतम प्रतिशत घुलनशीलता के साथ पृथक-पृथक आंकड़ों के साथ प्रविष्टियां दर्ज की जाएंगी।

इसी तरह उक्त आदेश में अनुसूची VII में, 'नैनो उर्वरक के सामान्य विनिर्देश दिए गए हैं। जिसमें नैनो नाइट्रोजन में प्रविष्टि 2 में 20-50 के स्थान पर 100 और 20-80 के स्थान पर 100 अंक/अक्षर किए जाएंगे। उक्त आदेश में नैनो जिंक और नैनो कॉपर के निर्धारित मात्रा के मापदंड तय किए गए हैं, जो इस प्रकार हैं -

नैनो जिंक में एक विमा में कण का आकार (नैनोमीटर)में,-(क) टीईएम विश्लेषण के अनुसार भौतिक कण आकार न्यूनतम 50 प्रतिशत। सामग्री की मात्रा <100 एनएम होगी। (ख) डीएलएस विश्लेषण के अनुसार द्रव गति का कण आकार न्यूनतम 50 प्रतिशत। सामग्री की मात्रा <100 एनएम होगी। सरफेस चार्ज या जीटा पोटेंशियल (+/- स्केल) एमवी >15 होगा।

नैनो कॉपर में एक विमा में कण का आकार (नैनो मीटर) में,-(क) टीईएम विश्लेषण के अनुसार भौतिक कण आकार न्यूनतम 50 प्रतिशत। सामग्री की मात्रा <100 एनएम होगी। (ख) डीएलएस विश्लेषण के अनुसार द्रव गति का कण आकार न्यूनतम 50 प्रतिशत। सामग्री की मात्रा <100 एनएम होगी। सरफेस चार्ज या जीटा पोटेंशियल (+/- स्केल) एमवी >15' होगा।

जैन पाईप

No. 1 कंपनी भारत की,
जिसने सिंचाई, पोयजल आपूर्ति, बुनियादी ढांचे,
औद्योगिक, प्लंबिंग और जल निकासी
अनुप्रयोगों के लिए प्लास्टिक पाइप और फिटिंग
की विस्तृत श्रृंखला प्रदान की।

चाहे पानी हो या सीवेज,
बुनियादी ढ़ाचे या सिंचाई के लिए..
जैन पाइप आपको संपूर्ण पाइपिंग समाधान प्रदान करता है

जैन पीवीसी पाईप
सही आकार, सही लम्बाई, सही वजन और सही मोटाई!

जैन इरिगेशन सिस्टम्स लि.
छोटे छोटे कदम, आसमान छूने का दम!®
जैन पाईप®

JAIN Mobile App | JAIN Website link

पूछताछ और उपयुक्त समाधान के लिए संपर्क करें
मो: +91- 9422773585; टोल फ्री: 1800 599 5000
मध्यप्रदेश- विवेक डांगरीकर: 9406802800; जावेद खान: 9406802820; आनंद जैन: 9406802828;
विकास नेमा-9406802848. राजस्थान- भरत सोनी: 9530390821;
छत्तीसगढ़- गिरीष मख़वाणा: 9422776835.

जैन कॉलम पाईप | जैन केसिंग पाईप | जैन प्लम्बिंग | जैन पीई पाइप®